नं० ५४५० — घ

स्कन्धास्थि प्रश्नः

पत्राणि २५

ज्योतिषम्

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं० ५४५० – घ
स्कन्धास्थिप्रश्नः (ज्यौतिषम्)
पत्राणि २५

नं ६८३क
स्कन्धास्थिप्रश्न
ज्योतिष
पत्राणि
२५

5450
F – 25

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरिनामामृ॰

श्री रणवीर पुस्तकालय
सं. ८५
नं. ८९३
मंदर श्री रघुनाथ जी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐश्रीगणेशायनमः यन्माययात्रनिखिलंवैचित्र्यंदृश्यतेद्भुतं
तंनौमिपरमानंदंसर्वसाक्षिणमीश्वरं १ श्रीरणवीरसिंहाख्यम
हाराजनिदेशतः स्कंधाख्यप्रश्नसंज्ञोयमपूर्वःक्रियतेमया २
यद्यपिसंतिजगत्यांशास्त्राणिमहत्तमानिदैवविदां तदपिविचि
त्रमिदंदृष्ट्वासर्वेप्रहृष्यंतु ३ दुर्जयांस्तिब्बताद्यांश्च प्रत्यंतानजयद्यदा
श्रीमद्गुलाबसिंहाख्योमहाराजोमहामतिः ४ महाराजप्रतापाग्निप्लुष्टपद्धतिकंटकाः
पाटक्करभयोन्मुक्ताजनाश्चक्रुर्गमागमम् ५॥

ॐस्वस्ति प्रणमोंगणपति सिद्धिनिधिसरस्वतिकोरस
हाय भास्करहरिहरथाइकेरचोंग्रंथमनभाय १ य
न्माययेति जिसईश्वरकी मायाकरके इससंसारमें ना
नाप्रकारकी अद्भुतविचित्रतादेखपडतीहै तिसपर
मआनंदस्वरूप और सकलजगतकासाक्षि ईश्वरकोंप्र
णामकरताहूं १ श्रीमन्महाराजाधिराज जंहूकाश्मीर
तिब्बतादि अनेकदेशाधीशप्रभुवर महाराजश्री १०८ रण
वीरसिंहजीकी आज्ञासें इहस्कंधाख्यप्रश्ननामकग्रंथ अ
पूर्वका जोसंस्कृतभाषामें पीछे नहीं है सोमैंने बनावदा
है २ यद्यपि इसजगतमें पूर्वआचार्यकेबणायेदे प्रश्न
ग्रंथवडे हैं तदवी यहविचित्र आश्चर्यकीन्याईहै इस
केदेखनेसे ईश्वरकी आश्चर्यमाया प्रत्यक्ष मालूम
होतीहै इसवास्ते इसग्रंथको सभलोक अच्छीतरह
देखकर आनंदको प्राप्तहोवे ३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अभूत्पुरा यवनदेशे लुकमानिति विश्रुतः तस्यासीच्छुदियं वि
द्यात्रिकालज्ञानदर्शिका ४ ज्ञानं त्रैकालिकं वक्ति तया सो पुस्त
कस्थया तेनास्य वशगाः सर्वे लोकास्तद्देशवासिनः ५ दृष्ट्वास्य
महदैश्वर्यं रिपवो मर्षपूरिताः हृत्वा तान्पुस्तकान्सर्वान्छित्वा
भित्वा जलेऽक्षिपन् ६ विद्या जले विगलिता पीता मेषैस्तृषाकुलैः
स्थिता तेषां स्कंधमध्ये सा मायायां किं न भाव्यते ७

अब इस ग्रंथकी उत्पत्तीका कारण लिखते हैं पीछे कोई का
लमें यवनदेशविषें एक बडा विद्वान् लुकमान नामवा
ला बडा प्रसिद्ध होताभया उसके पास यह त्रिकालज्ञान
को दिखानेवाली विद्याथी ४ उससें वह त्रिकालज्ञान लो
कोंको कहताथा परंतु विद्या उसके पुस्तकोंमें लिखीथी
इसकारणसें उसकी आश्चर्य वातें देखकर उसदेसके लो
क उसके अधीन होतेभये ५ इसका वडी ऐश्वर्य देखकर
लुकमानके शत्रु क्रोधकरके युक्त होयके इसदी वडया
ईको नेसहारतेभये एकसमयमें मोका देखकर लुकमा
नके पुस्तकोंको चुरायके पाडकर टुकडे करके जलमें
डारतेभये ६ वह विद्या जलमें गलगई वह जल तृषा
करके व्याकुल होयके भेड्योंने पीना सो विद्या इनके
मोंढेमें जाकर स्थित होतीभई यह वात आश्चर्य है पर
ईश्वरकी मायामें क्या नहीं संभावना होसकता ७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तोसर्वत्रविविल्वह्निनच्छिष्यैस्तत्रलक्षिता हस्तामेषष्टहीना
स्त्रस्कंधाख्यितैस्मुदान्वितैः ८ स्वभाषयाथतेचक्रुः ग्रंथंछ्या
नेतिनामकं ततःप्रभृतितद्देशेविद्याविस्तृतिंगता ९ प
तक्कुत्वामहाराजोमुत्वोत्तद्देशवासिनां आनयामासतंत्र
ण्येतेभ्योदत्वायत्नेवहूः १० तस्माद्गृहीत्वारचितंग्रभूणांसा
शनान्मया यथातत्रतथैवात्रभाषाभेदोत्रकेवलं ११ गूढ
आयमहाप्रश्नाःज्ञायंतेत्रस्फुटाशयैः तस्मायोत्रसदाभ्यासं
करोतिसत्रिकालवित्

पीछेसेउसके विद्यार्थीतोपणलगे तोउनोंहना किपुस्तकपाडके
इसजलमें फेंकेथे और उसवक्त वहजलमेडुकोंनेतथावक्तनेपीता।
था यहवातजानकर उनोंमेडुमारया उसकेसारेअंगपरीक्षाकरीके
मोंफेकीहड्डीमें विद्याकोलक्षितकीता औरदेखकरवडेखुसीहोए ८
फेरउनोंने अपणीभाषामें ग्रंथवनाया उसकानामछ्भाररखया उसदि
नसेलैकरीके इहविद्याउसदेशमेंविस्तारकोप्राप्तभई ९ इहवातउस
देशकेलोकोंसेसुनकर श्रीमहाराजजीने वहुतधनदेकरयहपुस्त
कमंगवाया १० उससेलेकर मैंनेश्रीमहाराजजीकी आज्ञासेसंस्कृ
तमें साथभाषाटीकासहितवनाया जैसाउसग्रंथमेंथा तैसाहीइसमें
वीहै केवलभाषाकाहीभेदइसमेंहै ११ जिसकारणसे महाप्रश्नों
केगूढअभिप्राय इसविद्यामें प्रत्यक्षमालूमहोतेहैं तिसकार
णसें जोपुरुष इसस्कंधाख्यविद्या अर्थात् छ्यानेदीविद्याको
अच्छीतरह अभ्यासकरे उसकोंत्रिकालज्ञानप्राप्तहोताहै १

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

करामलकवत्सर्वं दृश्यते तेन वाक्स्फुटा भवेत्तस्य च योऽवृथा
देतच्छास्त्रानुसारतः २ युद्धार्थिनां च भूपानामेतच्छास्त्रं विशे
षतः जयाजयस्य ज्ञानार्थं बलाबलं च भाषितं ३ तस्माद्भूपैरव
श्यं वा अभ्यसनीयं जयार्थिभिः सदैव शत्रुभिः सार्धं येषां युद्धसं
भवः ४ तदा प्रयोजनं ह्यस्या विद्याया भवति ध्रुवं अध्यायाः म
नुसंख्योक्ताः ग्रंथेत्र विहिता मया ५ तत्रापि प्रथमाध्याये स्कंधा
स्थिग्रहणं स्मृतं तस्य कार्ये नियोगश्च तस्योपकरणस्य च ६
स्वकीये वा स्वमंत्र्यादिवर्गस्य वत्सरसंभवे मेषमानीय तस्यैव स्कं
धास्थ्यवलोकने ७

उसकों संपूर्ण पदार्थ करतलामलकी न्याईं देखपडते हैं और उस
की वाणी कभी झूठ नहीं होती २ विशेष करके यह विद्या जय पराजय
और युद्धार्थि राजयों का बलाबल देखने में काम आवती है ३ इसी
कारणसें उन राजयों को यह विद्या अवश्य जाननी चाहिये जिनकों
सर्वदा काल शत्रुवों के साथ युद्ध दा संभव होवें ४ तद उसवक्त इ
स विद्या प्रयोजन निश्चय करके पडता है इस ग्रंथ में चौदा अध्याय
हैं ५ तिनां चौदां अध्यायां विच प्रथम अध्याय में स्कंधास्थिग्र
हण अर्थात् छाने दे निकालने दी विधि कही है और उस
को कार्य में लगाने दी विधि और उसके उपकरण सामग्री भी
कही है ६ प्रथम नियम यह है कि जिस भेडु पदा छाना
निकालना होवे उह भेडु राजा के अपणे साल वाला होवे
अथवा अपणे मंत्री आदि पहलकार के साल वाला होवे
उसथों बिना और भेडु के ऊपर निश्चय ने करना ७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कं· टी· २

3

कुर्याज्ज्ञानस्यवा स्त्रीय विस्तरस्तरश्च होइवं मेषाभावेतच्छागस्य
स्कंधास्यावावलोकनं ८ अग्निवर्षोऽपिकोवापिवलपुष्टियुतः
सदा मेषः प्रशस्यतेतत्रप्रश्नं धीनेफलंस्मृतं ९ आवश्यकेपि।
कार्येवर्षाद्धीनोनशस्यते मेषस्यहिंसनेकार्यं चिंतनीयंसदै
वहि १० शूर्पणेवक्तव्यं प्रश्नंस्कंधास्थिसंततं प्रवहत्तोय
कूलेवा ग्रामेरम्यात्मविनेरः ११ प्रक्षाल्यतज्जलेवस्त्रेहरीकृत्वा
ततः पृथक् ।

अथवा अपणास्वतविश्वास जिसदेवतेऊपरहोवे उसदेवतेदाभेडु
चीलेकरीछानादिखनाचाहिये मेषाभावेभेडुनेमिले तांपूर्वोक्त
स्थानसे वकालेकरस्कंधास्थिदेखनीचाहिये ८ औरकहतेहैं कि
भेडुतीनवर्षकाहोवे अथवा तीनवर्षथोंजादेअवस्थावालाहोवे
और पुष्टहोवे बलकरकेयुक्तहोवे ऐसाभेडु अथवा वकराश्रेष्ठहो
ताहै जैसाबलऔरपुष्टिउसमेंहोवेगी तैसाहीप्रश्नमेंवीफलचं
गाहोवेगा ९ और जोआवश्यकजरूरीकामहोवे तोभीएकवर्षउ
मरसेघटउमरवालाभेडुनेचाहिये और जिसवक्तउसकोंमारणा।
लगें उसवक्तकार्यचिंतनकरनाचाहिये कि अमुककार्यवास्ते इ
सकोंमारतेहैं १० एहस्कंधास्थिप्रश्न अर्थात् छानेकाप्रश्नशू
र्पणमेंदेखनाचाहिये और प्रवहत्तोयका वगदेजलदे
किनारे आरामवागविच भेडुमारणाचाहिये और मारणेवा
लापुरुषमारणेवक्त पवित्रहोवे कपडेवी पवित्रधारणक
रकेमारे ११ और मारकरकेधोवे फेरवस्त्रकरकेएके
फेर उसके अंग वखेर वखेरे करें ॥

श्रृंगाग्निनास्य कृत्वीन ततः स्थाल्यां पचेद्बुधः १२ सुपक्वं तत्त्वनि।
ष्कास्य स्कंधास्थ्याचोपरिस्थितं मांसं शनैः पृथक्कुर्याद्यथास्थि नै
लेनष्या १३ मेषस्य भर्जनं केचिदमे स्कंधास्थि दाहनं स्कंधास्थि
पवनं वा मे प्रोक्तं यवनसूरिभिः १४ पाकं कृत्वा ततो दृष्ट्वा पश्चा
द्दाहरूपैः स्मृतः पवे मार्गद्वयेनैव फलं ते निर्णयंति वै १५ अन्ये
त्ववामस्कंधास्थि मार्गस्यावलोकनं कुर्वंति यद्यपि ते के वाम
मेव शुभं जगुः १६ एवं सर्वमतं वीसलकमानेन भाषितं राज्ञा
नष्या रहे घानां मेषाणां संबंधिनामपि १७

फेर छानेवाले श्रृंगको वलटोहिमें पाइके ग्रह्वीतरहपकावे १२ फे
रपकाइके उसकों वाहरनिकालकरके उसके ऊपरसे मांस धीरे २
हरकरे जिसमें छानेको हलचुलनालगे १३ इसविषयमें के यव।
नाचार्योंकामत होके मेषभेड़ेकाभुन्नना श्रोर कईकहते हैं कि छा
नेकोजलाईलेना श्रोर कईकहते हैं कि छानेकोंपकाईलेना फेर
देखना १४ परंतु जोजलाईके देखणा लिखाहै सोव खरामार्ग है
श्रोर कईपकाईके फल देखते हैं फेर साडीके देखते हैं दोनोंप्रका
रसे फलका निश्चय करते हैं १५ श्रोर केयवन कहते हैं कि वामे।
पासेदे छानेको मागकरीके दहिणे छानेकोंसफाकरके देखते
हैं यद्यपि कैप्रकरणेंमें कईयोंनि लिखाहै कि वामा छाना श्रेष्ठ
है १६ तदवी यथार्थमत लुकमाननामक यवनाचार्यकामत
यह है कि राजे श्रोर घरकेमालक श्रोर उनके संबंधी अथवा उ
नके साथ्य संबंध रखनेवाले १७

स्कं॰ टी॰ ४

५ स्याद्देवफलंवाच्यंततोन्येषांतुवामतः देशग्रामदिशांकीदृ
कृग्व्यवस्थेमावलोकनं १८ परदेशीनरस्यापिवामादेवाऽव
लोकयेत् द्वयोःसमफलंप्रोक्तंतस्मादालोकयेद्द्वयं १९ क्रो
माद्द्वयंसमालोक्यंकेचिदेवंवदंतिच प्रायोनैतदपिकिंतुफलं
प्रकृतिजंमतं २० उभयोरेकयोयास्तुस्याप्रकृतिर्निश्चितातयोः
वह्नोकामयानेनस्कंधास्थिवरमस्यया २१ तामेवालोकयेत्किं
तुद्दष्टुर्हस्तेनदापयेत् हस्तस्पृष्टापिमांतुपश्येद्दृष्टासमाहि
तः २२ भूमौलग्नेयदातस्यपृष्ठभागतदाशुभम् ।

इनोंकाफलदहिणेपासेकेछानेथोंदेखनाचाहिये औरनगरदेशग्रा
म दिशाओंकैसीव्यवस्थाहोगीयहवात १८ औरपरदेशीमनुष्यकी
व्यवस्थायहवामेछानेथोंदेखनीचाहिए औरकैआचार्यकहतेहैं
कि दोनोंमुंढेबराबरहैं इसवास्तेदोनोंकेदेखनेसेतुल्यहीफलहै १९
इसवास्ते क्रमसेंदोनोमोंढेकाछानादेखनाचाहिये परंतु वहकर
केइहवातहै किइसकेऊपरनिश्चयनहींहै औरकहतेहैं कि कार्य
सिद्धिप्रकृति अर्थात् स्वभावसेंहोतीहै २० प्रकृतिस्वभावदोनोमों
ढेयोंकाएकहीहै दोनोयुग्मअंगएकहीस्वभाववालेहोतेहैं औ
र जेकरमेढुगिननीकेमारेजावें तोउनमेंसेभसेपीछेजोमारयाजा
वे उसदाछानादेखनाचाहिए २१ परंतु स्कंधास्थिदेखनेवालेदे
हाथनेपकडाने हरथोंछेडीकेसटणीचाहिए जो स्कंधास्थि
दीपीठ भूमिमेंलगजावें देखनेवालापासाऊपरहोवे अ
र्थात् सीधीवे तांशुभहै कार्यसिद्धहोनाहै ॥

हो

अवश्यंकार्यसिद्धिस्तुनदानात्स्याद्विलोकयेत् २३ अंशाश्रियग्रहणे
शास्त्रस्पर्शीतत्रनकारयेत् सर्वेस्वसन्मुखेतस्यछत्राकांभिमुखे
स्थितः २४ पश्येदृष्टाफलंतत्रशुभंवायदिवाशुभं केचिदेकादिकं
मेषंहत्वादेवंब्रुवंतिवै २५ वर्षीहंतस्यमेषस्यअस्थिकार्येनसिद्धि
दा मेषिंहत्वातस्याश्रियातस्यातस्यवैद्रुधः २६ पाककालेनम
न्येतवैवंयत्रपरोभवेत् पश्चात्तत्रपरीक्षेतलक्षणंवशुभाशुभं २७
दक्षिणंवाथवामंवाबृहन्मेषस्यवापुनः अल्पस्यवाभवेदत्रकाला
दिनियमोपिनः २८ स्कंधास्यालोकातेनैवकालादिनियमोभवेत्

फेर और कुछ नहीं देखे अर्थात् फेर छाना देखने दा प्रयोजन नहीं
है २२ छाना लेने देवेले छाने कने शस्त्रने छूहणा चाहिये और दे
खने देवेले छाने दा मुख अपणे पासे करना पीठ सूर्य दे पासे करनी
चाहिए फेर देखने वाला उसप्यों शुभाशुभ फल देखे कोई कहते
हैं कि एक वर्ष का भेडु मारना चाहिये छाने वास्ते क्योंकि वर्षियों
दे उमरी दा भेडु मारीके उसदा छाना देखने में कार्य का नियम।
कुछ नहीं है जो भेडु मारी जावे तो उसदा वामा छाना लैके पकाना
प४ परंतु काणे में ऐसा स्मरण रखना चाहिए यो कोई तरादी हर
कत लगी के टुटी न जावे पीछें से उससे शुभाशुभ फल देख
ना चाहिये २७ को आचार्य कहते हैं कि छाना केसा ही होवा
हे दहिना चाहे वामा वडे भेडु दा हो चाहे छोटे दा हो और को
ई वक्त हो छाने देखकर अपना कार्य सिद्ध करना होर बात का
नियम कोई वी नहीं है ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केचिदेवं वदंतीति कार्यं संसाधयेद्बुधः मेषादिषु षट्कालमाने कार्य
स्य संभवदा स्यात्तो कार्यसिद्धेः संभवश्चेद्वर्षमासद्वये यथवा तदा क्रमे
ण स्कंधाख्यि मेषयोः द्व्येकमासयोः अस्मादपि यदा स्वल्पकालस्य
संभवो भवेत् तदा मेषस्याल्पवयसः स्कंधाख्यलोकनेमत आयुके
षट्प्रकारेषु कालस्य नियमो न्यथा कृतस्तत्र यदा स्यानेकधा विधा
मिश्रस्फुटं स्कंधाख्यग्रंथसीमां संकेतं च वदाम्यहं अग्रे कांगस्य सं
ज्ञां वा वधिं वापि प्रकारतः इति श्रीमहाराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञया
ज्योतिर्विद्विश्वेश्वरविरचिते स्कंधाख्यिग्रंथे प्रथमोध्यायः १

मेषभेडु दीआ छयां कार्यसिद्धि दे कालदी अवधी जाननी जेकर
कार्य दी सिद्धि दा संभव वर्ष पीछें होवे अथवा दो महीने में होवे
तां क्रम करके वर्ष में संभव होवे तां दो महीने दी उमर दा भेडु मार
ना और जो दो महीने दा संभव होवे तां नौ महीने दा भेडु मारणा उ
नां दा छाना देखना चाहिये और जेकर कार्यसिद्धी दो महीने थों वी
थोडे काल विच होने वाली होवे तां अल्प थोडी आयु वाला भेडु मा
रीके छाना देखणा चाहिये पीछें कहे जो प्रकार हैं उनों में काल
दी अवधी और प्रकार सें कही है आगे यथार्थ काल की अवधी य
थास्थान में अपने २ स्थान में कहेंगे अब छाने दे अनेक अंग दे नाम
और सीमा कि सकी कितने तक है और उनके संकेत करने हैं इति
श्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञया विश्वेश्वरविरचिते स्कं
धाख्यिनामकग्रंथे भाषाटीकायां प्रथमोध्यायः १

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथद्वितीयाध्यायारंभः संकेतस्थतथ्यासीमास्कंधास्थ्यंगवर्ण
नं प्रत्येकांगविभागस्य दैर्घ्यमायाममेवच १ अकारादिकवर्णैश्च
स्वासत्रलिखितैस्तथा अंगानांसंस्थितेर्ज्ञानमध्यायेस्मिन्निरूप्यते २
स्कंधास्थ्येकपार्श्वेयत्स्थानंस्कंधशिरःस्मृतं तत्पश्चवर्तुलाकारा
वधिकंगर्तसंयुतं ३ तरुणास्थिभिरापूर्णे स्कंधस्यगलमेवतत् ग
र्तेतन्मिलितंस्कंधशिरसःक्रमविस्तृते ४ तथास्कंधस्यशिरसःपा
र्श्वेस्थक्रमवृद्धयं स्थानंतरंगवद्दृष्टं तत्रैतेर्भाषितंहितत् ५ तमेवयव
नाचार्यामोजीतिकीर्तयंतिवै अथास्ययोवृहद्भागस्त्रिकोणसदृशश्च
सः ६

अबद्वितीयअध्यायदाआरंभकरतेहैं इसअध्यायमेंसंकेत औरछाने
देअंगांदीसीमा अर्थात् अवधि औरछानेदेप्रत्येक अंगदावर्णन और
अंगोंकाविभाग और लंबाईचोडाई १ और अपणेपासलिखितजोअ
कारादिकअक्षरहैं उनोंकरकेछानेदेप्रत्येकअंगदीस्थितीकावर्ण
नहोवेगा २ स्कंधास्थि अर्थात् छानेदेएकपासेजोस्थानहै उसदा
नामछानेदासिरहै और स्तनअंगहै और उसदीअवधीगोलआ
कारतकहै और उसमेंगर्तहै ३ औरगर्ततरुणअस्थियोंसेपूर्णहै
उसकोमोंढेदीचंडीकहतेहैं औरगर्त उसचंडीदेसाथमिलया
दाहै और मोंढेदेसिरसेलेकरक्रमसेविस्तृतहै ४ और स्कंध
सिरकीवखीजोछोटासघन और क्रमसेवृद्धिकोप्राप्तविभागहै
उसको वैद्यजाननेवाले जलतरंगवत् वहस्थानकहतेहैं ५
उसीको जवनाचार्य यवनभाषामें मोजीकहतेहैं और जोवडा
वृद्धिकोप्राप्तहै सो इसकाविभाग लंबेत्रिकोणकेआकारवाला
है ६ उसकरके छानेदे दोभागहोयेदेहै वहदोभागसमतलक
होतेहैं उनमेंसे एक लघुतलमेंस्थितहै ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कं॰ टी॰ ६

स्कंधास्थस्थलभागस्थितेनभागद्वयंकृतं तमेवपर्वतंश्रोतुस्कंधा
स्थश्रेष्ठभागकं ७ प्रधानंततसर्वेषुस्कंधस्यावयवेषुच समभा
गोपरिगतंविस्तृतंबलवच्चतत् ८ स्कंधास्थितयोत्कृष्टभागंश्रो
तुश्चसंज्ञया यत्स्थानोपरिगंहेमतस्कंधास्थास्थलन्तुखेमतं ९ तमे
वयवनाश्रोतुकुतानेतिवभाषया निम्नक्रमेणद्वंद्वयत्कुतानंश्रोच्य
6 तेहितत् १० एतस्थानंहितस्थोकंयेनायंचातितःपशुः यदर्थेद्व
मतेवापितस्थानमपिचोच्यते ११ किंचयत्स्कंधशिरसःसम्मुखे
पार्श्वतःस्थितं प्रतिसंकोचतांप्राप्तंवैकपार्श्वेनयद्भवेत् १२ कृता
नंतमपिश्रोतुस्कंधास्थाद्वितयेवच तस्माघदपरंपार्श्वभागःस्थानं
तदुच्यते १३

उसकोस्कंधास्थिपर्वत अर्थात् छानेदापहाड औरछानेदाउत्तमश्रेष्ठ
भागवीउसकोंकहतेहैं ७ वहस्कंधास्थिकेसंपूर्णअवयवोंमेंविस्तार
वाला औरबलवालाअवयवकहतेहैं और समभागदेशपरस्थितहै ८
इसीकोछानेदापहाड तथातक औरउत्कृष्टस्थानकहतेहैं औरइस
पहाडजिसदेशपरहै उसकोछानेदामुखकहतेहैं ९ इसीकोयवन
भाषामेंकुतानकहतेहैं कुतानउसकानामहै जोपहिलेनीमाहोवे
आगेकमसेंवृद्धिकोंप्राप्तहोवे १० एहकुतानउसदास्थानहै जिसने
भेडुमरवायाहोवे अथवा जिसदेवास्तेमारयाहोवे उसदास्थानहै वह
राजाहोवेचाहेराजामंत्रीआदिकोइहोवे ११ और मुख्यकरकेकुता
न उसजगादानामहै मुंढेदेशिरकेसामनेकिनारेकेपासहै और
दोनोपासेदाअपेनाइकपासेअत्यंतसंकोचकोंप्राप्तहै १२ उसको।
वीकुतान औरछानेदापहाडकहतेहैं उसथोंजोहसदापासाहै वह
शत्रुदास्थानहै १३ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अद्रिः समाप्तिर्यत्र स्यात्तत्रं सशिरसश्च यत् सन्धिर्विदृश्यते स्थाने श
रोः स्थानं तत्तदेव हि १४ स्कंधाधः स्वामिकान्तबलस्यतेऽङ्गनगास्सदा
तत्रैवोभयभेदस्य समाप्तिरपि दृश्यते १५ स्कंधास्त्रपर्वतेत्रोके त्रिको
णो वै स्वरूपतः शृंजनाकारवहृद्धिं ते मौजी निवतेजगुः १६ स्कंधास्य
शिरसः पार्श्वे लग्नं तद्दृश्यते सदा स्कंधास्योर्विस्तृताभागात्संकोचो
नतलोऽस्मृते १७ अस्मात्समविभागज्ञाः केतृगागमने विदुः अथवा।
श्रोष्ट्रमेषादिर्हाताकश्चिदागतः १८ यस्मिन्पार्श्वेन स्कंधास्याम
हद्धिर्दृश्यते तलहृदयविभक्तं न त्रिकोणं दृश्यते सदा १९ यद्यप्ये
नद्वनकोणमेकपार्श्वे विस्तृते अतिसंकोचनं यातेभागेऽपि।

द्वितीयके २०

ज्ञानेदेपहाडदीसमाप्ति जिथे है उसजगामें मौंफेदे।
शिरदेसामनेयोस्थानहै सोशाद्रदामुख्यस्थानहै १४ स्कंधमोंफेदेहेठ
जिथेज्ञानेदेपहाडदी समाप्तिहै किंचित्कालविक्रयी प्रतीत होताहै
उसस्थानमेंदोभेदोंकी समाप्तिहै १५ ज्ञानेदापहाडत्रिकोणस्वरूपक
हाहै औरगाजरकेआकारकीन्याईवृद्धिकोप्राप्तहै उसकोयवनभाषा
मेंमौजीकहतेहैं १६ वह ज्ञानेदे शिरकीवखीमें स्थितहै और स्कं
धास्थिदेविस्तृतभागथोंलेकेअतिसंकुचितभानकजोस्थानहै उस
कोंनलककहतेहैं १७ तस्मात्का इसस्थानसे समविभागदेजा।
ननेवाले खरीदनेवाले वपारीदाआगमनजानतेहैं अथवा घोडे
ऊठ भेड आदिक भेटलैके कोईआयाहोगा यहविचारतेहैं १८
और जिसपासे ज्ञानेदीवडीवृद्धिहै ओहपासादोनलोंमेंविभाग
कीताहोहै औरत्रिकोणरूपहै १९ यद्यपियहत्रिकोण श्रा
पहै परंतु एकपासेवडाविस्तृतहै और दूसरेपासे अतिसंकोचि
तहै २०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कं· टी· ७

तेनोच्यते त्रिकोणं हि तत्र हृद्त्रिकोणके षड्भागाः कल्पिता एवैः फ
लार्थं यवनैः पृथक् २१ यत्स्थाने यस्य संबंधः तस्मात्तत्फलं स्मृतं
अत्रैव केचिदाचार्याः न्यूनाधिक्यं वदंति च २२

इस कारण से त्रिकोण ही कहते हैं उसमें जो बड़ा त्रिकोण है उसके छे
भाग किये हैं यवनों ने फल के वास्ते बखरे बखरे २१ जिस जिस स्थान में
जिस जिस का संबंध है उसका फल उसी स्थान से विचारया जाता है इसी
में कोई आचार्य विभागों की न्यूनाधिकता भी कहते हैं २२

अकारादिकवर्गाणां विभागानां स्थितिः पृथक् तद्यथा स्कंधशिरसि
(अवज) गले तथा समतले (व·अ·ह) कृतानस्थाने तथा त्रिकोणे (ह·
व·ह) स्कंधास्थिपर्वते तथा उत्तमस्थाने (ह·र·त) तस्मिन्पर्वते यत्सम
तलोपरि (व·ह·ह·) समतलार्थं एवं वर्णविभागसिद्धिः अथ यत्सम
तले द्विविभक्तं तत्र हृत्समतलत्रिकोणे (ह·व·य) लघुत्रिकोणे (हयह)
समतले च (हवय) अथ यद्धृत्समतलत्रिकोणं पंचभिस्तत्कोणैरे
केन त्रिकोणेन च विभक्तं तत्र प्रथमकोष्ठके (वजयक) एतत्स्थिका
नां स्थानं द्वितीयगृहे (हलमक) एतत्समभूमेस्तथा पर्वतानां स्थानं
तृतीयकोष्ठे (लहसम) एतत्कृषपारिकृषाणां तथा सेनायाः स्थानं
चतुर्थगृहे (हअफस) एतत् आगारस्थानं नगरदेशस्थानं च पंचमस्थाने
(असफफ) एतच्चौरस्थाने षष्ठस्थाने (हसफ) वर्णाः कल्पिताः एतद्दिवा
हस्थानं वाग्दानस्थानं च तथा स्कंधशिरसि गृहविचारः कार्यः एवं
(हजहजअ) वर्णाः हृत्कोणत्रये विभक्तं तत्र (वहफर) त्रिकोणे पदार्थ
विचारः कार्यः (फरसम) त्रिकोणे मेषसमुदायस्य अन्यपशुसमुदा
यस्य च विचारः कार्यः (वसमरहह) गृहे हिममेघविचारस्तथा ह
हिह्यानि विचारश्च कार्यः ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अवस्कंधादिदे विभाग कहते हैं उनां विभागों दी स्थिति अकारादि व
र्णों के द्वारा है जैसे आगे लिखे हैं मोंढे दे सिर में (अवज) तथा ठोडी में
समतल में (बअह) कुतान में तथा त्रिकोण में (हवह) छाने दा पहा
ड और उत्तम स्थान में (हरत) वह पहाड जिस्दा दान में खडा है (वहह)
समतलों के वास्ते इस तरह प्रसिद्ध है और क्रम से एवों के समता
ल दो विभागों में है और वडे त्रिकोण में (हवय) छोटे त्रिकोण में (हयह)
समतल में (हवय) और जो वडे त्रिकोण दा समतल पांच विभाग चा
न कोण और एक त्रिकोण में विभाग कीता है उन में पहिला घर
(वनयक) है एह पथिकजनों से संबंध रखता है और दूसरा घर
(हलमक) है वह समभूमि और पहाडों के साथ संबंध रखता है ती
सरा घर (हलसम) है वह सिपाही और सेनादे साथ संबंध रख
ता है चौथा घर (हअफस) है नगर और नगर देशा के साथ
संबंध रखता है पांचमा घर (असफफ) है एह चोरों के साथ
संबंध रखता है छेमा त्रिकोण (हसफ) है इसका संबंध वि
वाह और कुडमाई दे साथ है जैसे ही मोंढे दा सिर चोरों के साथ
संबंध रखता है और इसी प्रकार त्रिकोण हजहजअ इनां अ
क्षरों पर तीनों त्रिकोण वंडे हैं (वहफर) त्रिकोण पदार्थों के
साथ संबंध रखता है और (फरसम) एह मेडुआं दा समूह
और कोई समूह दे साथ संबंध रखता है और (वसमरहह)
इह जो है सो वर्फ वद्दल और वृद्धि तथा हानि दे साथ संबं
ध रखता है ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एवंबहुषुग्रंथेषुयवनैःकथितास्थितिः तथैवात्रमयाप्रोक्ताकार्या
णांफलहेतवे २३ नियतस्थानतोमत्रकेषांविद्रूप्यतेफलं एवंच
बहुधाहष्टंफलंस्थानेषुनिश्चिते २४ एवंस्वरूपंस्कंधास्यास्तथैव।
स्थाननिर्णयः अध्यायेस्मिन्मयाप्रोक्तःशुभाशुभफलायवै २५
इतिश्रीमहाराजाधिराजरणवीरसिंहाज्ञयाज्योतिर्विद्विश्वेश्वरवि
रचितेस्कंधास्थिप्रश्नेस्कंधास्यगवर्णननामद्वितीयोध्यायः २ स्कंधा
स्यःकस्यांगस्यसंबंधःकेनवस्तुना कस्मात्किमनुमानंचवदतोयत
त्रिरूप्यते १ स्वस्थानादेवसर्वेषांफलंबुध्याविचिंतयेत् कदाचिदन्य
स्थानाद्वाफलंजानंतितद्विदः २

इसतरहबहुतग्रंथोंमें जवनोंनेछाणेदअंगोंकीस्थितिकहीहै तै
सेहीमैंनेवीकार्योंकेफलदेखणेवालेकहीहै २३ जोस्थानजिसके
वालेनियतकीताहै उसथों दूसरेस्थानमेंवी उसकाफलदेखने
मेंआवताहै परंतु योस्थाननिरूपणकीतेहै इनोंमेहीबहुतकर
केउनकाफलदेखनेमेंआवताहै इसवास्तेउनकीस्थितीउनस्था।
नोंमेंकहीहैं २४ इसतरहसेंछाणेदास्वरूप औरस्थानोकानि
र्णय इसअध्यायमेंशुभाशुभफलदेखनेवालेकहाहै २५ इति
श्रीमन्महाराजाधिराजरणवीरसिंहाज्ञाविश्वेश्वरकृतस्कंधास्थि
प्रश्नेभाषाटीकायांस्कंधास्थ्यंगवर्णननामद्वितीयोध्यायः २
तीसरेअध्यायमेंछाणेदाकोणअंगकिसवस्तुदेसाथसंबंधर।
खताहै औरकिसवास्तेदाज्ञानकिसअंगसेंकरनापड़दाकहते
है १ सभवस्तुदाफलअपनेअपनेस्थानसेंदेखनाचाहिए बुद्धी
कनेविचारकरकेफलदीसिद्धिकरनी कदाचित् एककाफल
दूसरेदेस्थानसेवीदेखनेहैं २

एवमेव परेणापि संबंधो न तथैव च एकोपि बहुकार्याणां बोध।
को भवति ध्रुवं १ एकस्याथ बहूनां वा कार्याणां ज्ञायते फले वि
नश्वरे स्मिन्संसारे स्कंधास्येवेति चाद्भुतं ४ स्कंधोर्ध्वकल्पिता भागा
स्कंधास्य स्तः पृथक् पृथक् भागद्वयं हि स्कंधस्य कल्पितं फलदेन
वै ५ तत्राद्यभागादेकेनासंततेः फलमुच्यते स्कंधास्याद्धि समीप
तस्थानेनतत्समुद्भवेपरं ६ सन्मुखे स्कंधशिरसः स्थाने तत्र विनि
श्चितं यद्बहिः शृंजनाकारा सा पार्श्वे प्रथमे स्थिता ७ तामेव शृंज
तिं प्राहुः हजारादेशवासिनः एतद्रूपतेः स्थाने जायास्थानमा।
ख्यायते ८ समीपे स्कंधशिरसः स्कंधास्यः शिरसोवधी मतं यद्र
प्रपते तत्र जायास्थानं प्रकीर्तितं ९

इस तरह एक स्थान दा संबंध दूसरे स्थाने दे साथ बी होता है इसी वा
ले ख्याने दा एक अंग बहुत कार्यों का जनाने वाला होता है १ एक
कार्य का अथवा बहुते कार्यों का फल इस जन्म मरण युक्त संसार
में केवल एक ही ख्याने से देखते हैं यह बड़ी आश्चर्य की बात है ४
पंख सहित एवं क फल जानने वाले ख्याने दे अंग बखरे बखरे क।
ल्पना कीते हैं और मोंढे दे सिर दे दो विभाग फल वास्ते कल्पना
कीते हैं ५ उन दो भागों में पहिले भाग से बच्चों का और अपणी
संतान का विचार करना यह स्थान ख्याने दे पहाड़े दे समीप है उसी के
सामने दूसरा स्थान है ६ निश्चय कर के मोंढे दे सिर दे सामने बह स्था
न है और गाजर दे आकार जो बाहिर है सो पहिले पासे में स्थित है ७ इसी
कों हजारे दे रहने वाले सो जी कहते हैं सो जी हारदे स्वामी दी स्थान है
अब जाया जो स्त्री है उस दा स्थान कहते हैं ८ मोंढे दे सिर दे समीप जो स्था
न है तिस की समाप्ति ख्याने दे सिर तक है सो गर्त रूप देखने में आवता है
सो अपनी स्त्री दा स्थान है ९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्क॰ गर्जेकेंद्रसमीपे तत्स्थाने वा मतंगरंजनं तद्देशस्य दामानां स्थाने प्रो
टी॰ क्तं मनीषिभिः ९ तदा मत्तकूटहास्य स्थाने होलकोल्लथा ग्रथशृंजन
९ वहूहुं विवाहस्थानमीरितं ११ स्कंधास्य्रः कंठपार्श्वे यदा दोर्मकोव
तागते अग्रे विस्तृतिमापन्न स्थाने शत्रुगृहस्य तत् १२ स्कंधस्य कंठ।
पार्श्वे यन्न्वलं तस्य समीपगं स्थानं नेत्रेयं नवो फायास्तस्मादपि समी
पगं १३ जामातृकदिंते स्थानमथास्यापि वसन्मुखे विस्तृतं तदपते
यत्नशत्रोः स्थानं तदेव हि १४ द्वितीयार्द्धेतिय शांतमुभयो रस्ति भागयोः :
शत्रोः स्थानं तदप्यास्ति पूर्वेतिं मुख्यमेव हि १५ स्कंधस्य विस्तृततः।
ले स्कंधास्य छेदे गलांतरे शत्रुमेमस्य शत्रोस्य स्थानं ज्ञेयं मनीषिभिः १ ९

उसगर्तदे केंद्र दे समीप जो स्थान है और गजरदे आकार वृद्धि जिसदे समी
पहै वह स्थान चोरदे नौकरांदे साथ संबंध रखता है बुद्धिवानों ने कहा है १०
उसगतदे केंद्र दे समीप जो स्थान है सो वडे नौकरों का स्थान है और हूरा जो
है सो छोटे नौकरों का स्थान है जैसे रसोया कीर लकडी ल्याउनेवाला आ
दि और गाजरदे आकार जो वधाया दा स्थान है सो विवाह ऊउमाईदा स्था
न है ११ और छाने दी चंडी दे पास जो स्थान है पहिले संकुचे और आगे विस्ता
र को प्राप्त है मुख्यकरके दोनो पासे है सो चरदे शत्रुदा स्थान है १२ और मों
फे दी चंडी दे पासे जो है उनो विच जो छोटा पासा है उसमें जो समीप स्थान है
सो नवो फासी दा स्थान है १३ और उसथों भी जो समीप स्थान है सो जामाता
दा स्थान है और रसदे सन्मुख जो स्थान है विस्तार वाला देखपडता है वह श
त्रुदा स्थान है १४ और दूसरा जो अर्ध है उसमें जिथे दोनो भागां दी समाप्ति है
उथे वी थोडा शत्रुदा स्थान है परंत मुख्य स्थान वही है जो छाने दा विस्तृत भा
गां पहिले कहि आये हैं १५ और मोंफे दा जो विस्तार वाला तल है उसमें छाने
दे पहाडथों पकडे गल अंतराल में रानाहे शत्रुदा स्थान है ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कृतान्तमपि शत्रूणां स्थानं चैवमथास्ययत् सर्वपार्श्वं च तद्देशशत्रू
णां स्थानमुच्यते १७ अद्रेः समाप्तिर्यत्रास्ति तस्मादेकाङ्गुलान्तरे शृङ्गसं
वेधिनां स्थानं कल्पितं बुधैः १८ स्कन्धास्य शिरसः पार्श्वे सम्मुखे
तलविस्तृतिः कोलीति संज्ञया प्रोक्ता ह्यद्रेः स्थिता तलद्वये १९ स्कन्धा
स्याद्रेः स्वरूपादि पूर्वमेवोदितं मया स्कन्धास्यालघुभागात् सर्वकार्या
र्थदर्शनं २० स्थानं चात्मशृङ्गे कोशं धनोपायनमेव च तलप्रान्तादेव चि
न्तितं चैव विजयास्तथा २१ शृङ्गस्थानस्य या सीमा ततोंसशिरसश्रयत्
किंचित्समीपे च स्थानं प्रान्तस्थानं न देवहि २२

और शत्रुदी सेनादा स्थान वी उथें ही बुद्धिवानोंने करा है १६ और कृतान्त
जो है सो वी शत्रुवोंका स्थान है और इसदी संपूर्ण वखी जो है सो देसके श
त्रुदा स्थान है १७ और छानेदे पहाड दी समाप्ति जिथें है उथे एक अंगुल
दे अंतराल में धोरे दे संवेधियोंका स्थान बुद्धिवानोंने कल्पना कीता है १८
और छानेदे शिरदे सामने जो तल दी चवडाई है उसकों कोली नाम करके।
कहते हैं और छानेदे पहाड दी स्थिति में छानेदे दो हिसे रूप है १९ और
छानेदे पहाड दा स्वरूप आदि पीछे कह्या है वा छानेदा पहाड त्रिकोण रूप
है इसीकों वडी बुद्धिवी कहते है और छानेदे सिरदे सामने जो किनारा है इस
तलसे वी उसी का प्रयोजन है उसके किनारे जो स्थान है उससे वो ही प्रयोज
न है और छानेदा जो छोटा भाग है उससे संपूर्ण कार्य देखे जाते है २० स्थान
और अपना घर और कोशभंडार और धन और उपायन भेटा और वि
जय एह संपूर्ण तलदे किनारे जो स्थान है उसथों विचार करना २१ धोर
दे स्थान दी जो सीमा है मोंढे दे शिरदे पासे थोडे समीप सो भाईदा
स्थान है २२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पार्श्वस्थात्मसखोघोटोष्ट्रगजानांस्थानमेवच स्कंधास्थोयतलंवास्मा
त्स्थानश्रोतानहरणे २२ विस्तृतस्थानगंततत्तेषांस्थानंसमीरितं ल
घुभागेनयत्स्थानंतद्राज्ञःपार्श्ववर्तिनां २४ समभूवासिनांनृणांदेश
स्यवणिजांतथा स्वधनाढ्यमानांग्रामपानांचतत्स्मृतं २५ स्वकृ
तानस्यपहरेस्थानंशत्रुफलंततः अन्यासन्नेस्वकृतानान्मित्राणांमी
रितंफलं अथविस्तृतभागाग्रहिमाध्रपततंस्मृतं २६ हलिवर्षातथा
युद्धंदृढिलंठनमेवच एतस्ताचक्षयाशास्त्रमृतप्रादानिचिंतयेत् २७
इतिश्रीमन्महाराजाधिराजरणवीरसिंहाज्ञयाज्योतिर्विद्विश्वेश्वरविर
चितेस्कंधास्थिप्रश्नेद्वितीयोध्यायः २

और अपणेपासरहणेवालियोंका तथामित्रका और घोडे ऊंट हाथी आदि
कावीओहीस्थानहै और जोछानेदानलइसस्थानदेकिनारेयोंहरहै २२
और विस्तृतस्थानतकपड़ेवपादाहै सोभीइनांएवींकोंकास्थानहै और
जोछोटेभागकनेस्थानहै सोराजादेपासरहनेवालेवडेआदमियोंकाहै २४
और समभूमिमेंरहणेवालेमनुष्यांका तथादेशका औरअपनेधनसेवृद्धि
कोंप्राप्तजोवणियेहैं औरग्रामपतियोंहै मुकदम लंवरदारआदि उनका
वीवहीस्थानहै २५ और अपणेकृतानयोंहरजोस्थानहै उसयोंशत्रुदा
फलदेखना और अपणेकृतानयों प्रतिसमीपजोस्थानहै उसयोंअ
पनेमित्रकाफलदेखना २६ अथका इसकेउपरंतआगेजोविस्तृता
स्थानहै उसयों वर्फ वद्दल हलि तथायुद्ध लोटि लहूभगणा शस्त्र
सेमारेजाना इत्यादिकवातांदेखनियांचाहिये २७ इतिश्रीमन्महारा
जाधिराजरणवीरसिंहाज्ञयाज्योतिर्विद्विश्वेश्वरकृतस्कंधास्थिप्रश्नेभा
षाटीकायांद्वितीयोध्यायः २

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

राज्ञां वणिकानां च देशेशनगरेशयोः वाहिनीकोशयोश्चापि च
ह्येवं प्रोच्यते फलं १ येषां स्कंधास्थिविद्यायां निश्चयस्ते वदंति वै स्कं
धास्थ्यपर्वतं सर्वस्थानेन नगरस्य स्मृतम् २ यावंतोवयवास्तस्यः स्कंधपु
स्थ्यद्रेस्वरूपतः ते च यत्र बहूहकोणा राज्ञः स्थानं तदेव हि ३ यदा वाध
नपर्यंतं पूरिते रक्तविंदुभिः स्कंधास्थ्यापर्वते ह्येवं परेशस्य स्थितिस्त
दा ४ निर्विघ्नता च लाभश्च नगरस्वामिनो भवेत् अथ वेष्टिते स्व
तविंदुभिः स्कंधपर्वते ५ रक्ताश्चेहि द्वो मध्ये पररंगेन मिश्रिताः त
स्माद्देशान्तरादेशस्वामिनः परिवर्तनं ६ जाते भविष्यत्यथवा उद्यात
पविचत्रणैः अथवा रक्तिमाभिश्चापररंगेन केनचित् ७

राजा और हाकिम देश राज्यासन खजाना तथा वडा आदमी धनी और
नगराधीश देशाधिपति सेना इनों दी अवस्था चौथे अध्याय में देखनी चा
हिए १ जिनों का इस विद्या में निश्चय है वह कहते है कि कंधे दा पहाड
अर्थात् त्रिकोणाकार हड्डि जो कंधे दे उपर खडी है और कंधे दे दो हिस्से
करदी है सो सभ पहाड नगर दे स्वामी दा नियत स्थान है २ और कंधे दे जि
तने अवयव हैं उनका जो स्वरूप है उस विच यो वडा कोण है सो मुल्क कर
के राजा दा स्थान है ३ जेकर कंधे दा पहाड आदथों लेके अंत तक लाल
विंदुवां से पूर्ण होवे तां नगर दे स्वामी दी स्थिति उसी नगर में होती है ४
और नगरेश कों निर्विघ्नता पूर्वक शुभ फल प्राप्ति होता है अथवा
जो वह पर्वत चिट विंदुवां कने वेष्टित होवे ५ और मध्य में लाल विं
दु होर कोई रंग कने मिले दे होन तद उस देश दा स्वामि उस देश थों हटा
या जांदा है ६ हटाया गया अथवा थोडे काल में हटाया जावेगा इह
वात बुद्धि से जाननी जैसा संभव होवे अथवा जो वह पर्वत लाल विं
दुवां से युक्त होवे विच कोई होर रंग भी होवे ७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कं॰ देशाधिपस्ततो देशादन्यदेशं गमिष्यति अथ स्नाहीनं तां जातारुणता
टी॰ स्वैव फलं ८ स्कंधास्थ्यसा यदा वृद्धिः सर्वतो रणतां गता दृश्यते चेत
११ दा देशस्वामाप्रवृद्धिदा मता ९ रक्तता चेत् पृथग्भूता स्वेतनतास्थानगा
यदा तदा तस्य शुभा हानिः शुभे वृद्धिर्धगे भयं १० वृद्धेहपरिछिद्राणि
रात्तः दुःखकराणि च स्कंधास्थि शैले सर्वत्र श्वेतता यदि दृश्यते ११ त
दाराज्ञामनेश्च संत्ते ययात्रादिकारणैः दुःखानुमानेन तेयं तदाश्च
विचिंतकैः १२ श्वेतचिह्नं यदैकस्मिन्पार्श्वे शैलस्य दृश्यते तदा राज्ञः
वक्रविधारता कार्या सम्यग्विभिः १३ दृश्यते हि भयं घोरं तच्छांत्यर्थं
कारयेत् जपदानबलीमंत्रयंत्रपाठादिकाः क्रियाः १४

तां देशाधीशदेशायों वदली होकर होर देशकों जावेगा और जद लाल
गी है उथों चढदी जावे तद भी एवं वम्फल होता है अर्थात् उस देशायों
देशदे स्वामी दी वदली होती है ८ सो छाने दी वृद्धि सारे लाल होवे कि
नारे भी उसदे लाल होन तां देशाधीश दी आयुषा वज्रत होवेगी १ एह वात
जाननी ९ और उह लाल गी वखरी वखरी होवे और सपेदी अंततक हो
वे तां देशाधीश दी आयुषा थोडी होती है और जो सपेदी वृद्धिदे उपरंतक
पहुंचे तां भय प्राप्त होता है १० जेकर वृद्धी दे उपरछिद्र होन तां उस
स्थानदे राजा को दुःख प्राप्त होता है और छाने दा पहाड सारा चिट्टा
देखने में आवे ११ तां उस जगादा राज्या मन स्न होता है यात्रादि
कारणों से अर्थात् राजा उस जगादा छुटने हर अथवा नेडे गया दा हो
वे कोई दुःखदा अनुमान नहीं है १२ जेकर छाने दे पहाड दे एक पासे
पर चिट्टा चिह्न देखने में आवे तां राजादी वजीरों ने वज्रत प्रकारों से रक्षा
करनी चाहिए १३ तद राजा को वडा भय होता है उसदी शांती वास्ते ज
प दान वली होम मंत्र यंत्र पाठ आदि करवाने चाहिए १४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हृद्यूर्ध्वपार्श्वे स्वस्तिकं हृदे स्त्रिकोणमायदा संयुक्ता सूक्ष्मरेखाभिः दुः
खं स्थानपतेस्तदा १५ दुःखं मध्यसमे ज्ञेयं रेखा वा ह्रस्वता यदि लघु
ता चेत्तदा दुःखं स्वल्पं ज्ञेयं विचक्षणैः १६ स्कंधास्थे हृद्गृहे कोणे वि
स्तृते हरिते यदा देशाधिपगृहे पुत्रः जातो वाथ भविष्यति १७ स्कंधा
स्था यदा पार्श्वे स्वस्तिकं तारकिमाद्युता स्वल्पा च हृद्गती वापि तदा राज्ञः
सुतोद्भवः १८ वक्राः रेखा यदा तत्र सर्वोदितफलप्रदाः रंजितो हि स
मं मध्ये स्वस्तिको यद्यते यदा १९ तदा स्थानपतिर्ज्ञेयो पुत्रादीनां भयं भ
वेत् अथवा पुत्रतल्पानां दुःखं ज्ञेयं मनीषिभिः २० स्कंधास्थाद्धिस
मीपे तारेखा सैव निर्णयः वे स्कंधाद्धि समीपे च मलिना यदि का।
भवेत् २१

जेकर हृदि दा उपरला पासा विदा होवे और हृदि दी लालगी सूक्ष्म रेखां कने
मिली दी होवे तां उस स्थान दे हाकिम को दुःख होता है १५ परन्तु जो रेखा व
क्र होन तां मध्य तरह दुःख होता है जो थोड़ियां होन तां दुःख थोड़ा होता।
है इह बुद्धिमानां ने रेखां से अनुमान करना चाहिये १६ और जो स्कं
धा सी दे पर्वत दा वड्डा कोण बहुत विस्तृत होवे और सब्ज रंग कने
युक्त होवे तां देशपति दे घर पुत्र होया है या मिलता वी होवेगा पर
जानना चाहिये १७ जेकर स्कंधा ने दे पहाड उवाले पासे सपेदी और सर
खी होवे तां राजा दे घर पुत्र होने दा अनुमान है १८ अथवा तिरछियां
रेखा होन कांधे ने दे पहाड पासे तां वी राजा दे पुत्र होवेगा और जेकर
कांधे ने दा पहाड रंगदार होवे वीच में सपेदी होवे १९ तां उस जगा दे
हाकम दे घर पुत्रां को और पुत्र पौत्रियों दे तरफ जो पाले दे हैं उनां को
दुःख होता है बुद्धिवानां ने जानना २० और कांधे ने दे पहाड दे नेडे
अथवा दूर से ना दा निर्णय स्थान है जो कांधे ने दे पहाड दे सी समीप
मलीन स्याही होवे २१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तत्रैवस्वल्पताकिंचित्तदासैन्यस्यसंस्थितिः देशस्यसंख्याचविज्ञेयंयथ
थासर्वंमनीषिभिः २२ यदात्वस्वल्पतामध्येश्यामिकासर्वतोभवेत्
राज्ञःभयंसैन्ययुद्धंयुद्धेचापिपराजयः २३ यदात्वश्यामिकाछेदेट
व्यपेतस्कंधपर्वतात् सैन्यस्थानयुयोर्युद्धे निश्चयेनपराजयः २४
श्यामिकाचतथाश्वेतंतत्रैवदृश्यतेबहु स्कंधास्थ्याद्रिसमीपेतुश्या
मतेविस्तृतेसमं २५ राज्यासनस्थितिस्वल्पासैन्यानांसमर्थयोरपि
अल्पकालस्थितिर्ज्ञेयायवनाचार्यभाषिता २६ स्कंधास्थ्यद्रिसमीपे
यत्स्थानंराज्यासनस्यहि तत्समीपेयदाश्वेतंतदाराज्ञःभयंभवेत् २७
यदाराज्यासनस्थानेछिद्रमल्पंमहच्चवा अल्परोगभयंज्ञेयमल्पदुः
खंमहत्तमपि २८

और उथेंहीथोडीस्वेततावीहोवे तोसेनादी औरउसदेशदीस्थितिजै
सीहै तैसीहीवणीरहतीहै विद्वानैंहोताहै २२ और जदश्याहीसपेदी
देविचसारेहोवे तो राजांकोभयहोताहै सेनाकायुद्धहोताहै और
युद्धविचिविपाइयोंपराजयहोताहै २३ जदश्याहीछानेदेपहाडथोंहट
देखनेमेंआवे तो सेना औरउसजगादाहाकम इनांदायुद्धविचपरा
जयहोताहै २४ और जोश्याही तथासपेदीउथेंबहुतहोवे औरछाने
देपहाडदेसमीपविस्तृतस्थानदेवराबरश्याहीविस्तृतहोवे २५ तो
राज्यगद्दी तथासेना तथाहोरउसजगादेआदमी इनांदीस्थितिथो
डाचिररहतीहै पातसाहदीगद्दीस्थितरहतीहै एहयवनाचार्योंने
कहाहै २६ छानेदेपहाडदेपासजोस्थानगद्दीकानिश्चितहै उसदेपा
सजेकरसपेदीहोवे तोराजाकोभयहोताहै २७ जेकरउसीगद्दीदे
स्थानउपर छेककछोटा या वडाहोवे ताछोटफलरोगदाभयहोता
है वडाहोवे तो होरकोईदुःखहोताहै २८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यदाराज्ञामनस्थानेस्कंधावारान्यत्रतंभवेत् राज्ञःशुभदशाज्ञेया
समेदेशस्थितःशुभा २९ वक्रंयदाततस्थानेभवतिलघुपार्श्वके
तदास्थानपतेर्दुःखंराज्ञःपार्श्वदेश्यवा ३० यत्रास्नावातितोमेघस्त
स्यमध्यापिवा यत्स्थानेयस्यसंबंधितस्यास्थैस्वामिकाभवेत् ३१ न
गरेसैन्यचलनेपुरांतेस्वस्थताथवा महतीस्वामिकावेस्यास्वास्थ्य
सैन्यपतेस्तदा ३२ तैनैवनगराणांवस्वस्थतासमुदीरिता रक्तता
स्वामिकाभिश्रावेदाजोरुधिरस्रवः ३३ तस्माद्वेत्सवर्णान्तस्तल
खंडेवहिर्गते तदात्वस्मरायाधमाजनतेकदसंभवः ३४

जेकरगढीदीजगाछ्वानेदेपहाडथ्योंऊचीहोवे तांराजादेचंगीदशा।
जाननी अर्थात् चंगेदिनआयेहैं और समवरावरहोवे तांदेशयथा
स्थितरहेगा सभशुभहोवेगा २९ जेकरवहस्थानसेकोवितनलवा
लेपासेकोवेफाहोवे तां उसजगादेहाकम अथवाकोईवडेसरदार
कोदुःखहोताहै ३० अथवा जिसदेनामदाभेउसार्याहै उसकोदुः
खहोताहै और जोजोस्थानजिसजिसदेसाथसंबंधरखताहै उस
मेस्याहीहोनेथों ३१ नगरमें सेनाचलनेदाअनुमान अथवा न।
गरदेकिनारेस्वस्थतापेसनीदाअनुमानहै औरजोवडीस्याहीहो
वे तांसेनावालियांदीस्वस्थताजाननी ३२ उसथोंनगरादीवी।
स्वस्थताजाननी जेकरउथेंलालीकालेरंगेकनेमिलीदीहोवे
तांशुद्धहोंदाहै और युद्धविचेंलहूवगदाहै ३३ जेकरउसका
लेरंगेथों थोडास्याहीदाटोटावाहरनिकलयादाहोवे तां शि
कारवालियां सेनावास्ते अथवा सफरवास्ते कोईमनुषां
काइकवहोवेगा ३४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कं. तदेवंस्वामिकाखंडंस्वामिकांतोऽथमभवेत् ह्रस्वादागमनंज्ञेयंद
टी. तस्यनव्रजस्यवा ११ खलावेत्स्वामिकांतत्रमार्गेतुपथिकाभवेत्
१३ मध्याह्वेरेयथातत्स्याकालमागंतकेतथा १६ क्षयस्यवाथलेखया १०
स्याच्छेमदक्षिणभागके तदासल्परिनेस्तस्यमस्तेयोविचक्षणैः
रक्तताबामपार्श्वेवेत्तदायुद्धेजनक्षयः तथारक्तप्रवाहश्चज्ञेयस्तत्र
नसंशयः १८ बामस्यमध्यमपिचेद्रक्तंकश्चिन्महाजनः तंनिष्कास्य
ततदेशेस्वकीयाज्ञांकरोतिवै १९ सव्यभागशिरस्यैतत्कृष्णवर्णैः।
प्रविंदुभिः रेखाभिश्चयुतंवान्यत्सर्वंरक्तंभवेद्यदा ४.

और जेकरवोहीस्याहीदाटाटास्याहीयांवखराहोजावे तांहरयां।
कोईहत अथवामनुष्योंकेसमूहदेआगमकासंभवजाननावा।
हिये १५ जेकरस्याहीउथेथोडीहोवेस्याहीदेविच तांआउणवा
लेहतआदिपथिकजनरस्तेविचहोवेगे औरमध्यभागथांमित
नेहरस्याहीहोवे उसीसेआगमदाकालजानना जेकरस्याहीनेडे
होवे तांथोडाएकदोदिनरहोवे तांजादेदिनजानने १६ जेकर
मोंफेदेसजेपासे अथवाकानेदेसजेपासेदीवखियांसपेदहोन
तांथोडेदिनमेंउसदीमृत्युजाननीचाहिए १७ औरवामापासाला
लहोवे तांयुद्धविचआदमीकटजानेदाअनुमानहै औरलहूव
गणेदाअनुमानहै इसविचसंशयनहीहै १८ औरवामेदामध्य।
भागवीलालहोवे तांकोईवडाआदमी उसदेवडेआदमियांविच
उसकोनिकालदेवेगा औरउसकेदेशमेंअपणीआज्ञाचलावेगा
उसकीगदीमेंवैठजावेगा १९ औरजेकरदक्षिणेपासेदासिरास्वे
तहोवे उसविचकालेरंगदेविंदु तथारेखाहोन तथाहोरसारा।
लालहोवे ४.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तदान्तविंदुरेखाभिन्नस्यातोनुमीयते एणामिकारक्तताभिश्चातत्वउ
भित्तदामता ४१ जनपीडाभवेत्तत्र यस्यं तेचमहाजनः हरितामिश्चरे।
खाभिःयुक्तेमध्यसभित्तदे ४२ किंचिन्मलिनरक्ताश्चरेखातत्रमिलति
वै तदाक्लेशविनानीयात्सर्वदैवेतिनिश्चयः ४३ मध्यपार्श्वेशिररेखेत।
युद्धं एणामिकयायुतं वामपार्श्वेभयश्चातोश्चेतोयुद्धौयदावेवे ४४ देश
स्वास्थ्यं जनस्थैर्यं मंगलंवगृहे गृहे श्रवणेशुभवार्तायाःजायतेवतदा।
फ्रवं ४५ मुख्यमंत्रिव्यवस्थातत्तयाश्वेवदेवहि देशदेशाधिपस्याच्च
व्यवस्थाप्रवदाम्यथ ४६ रक्तयास्याद्वामभागार्धभागवेष्टनताभवेत् रक्त
भागतलश्चातेरक्ततानेवदृश्यते ४७ वामार्धरक्तवर्णात्तरक्तिमापीपि

कामभवेत्।

तदविंदुतथारेखामेउसदाकटजाणाअनुमानहै औरलालीकालेरंग
केनेयुक्तहोवे तांउभिन्नहोताहै ४१ औरलोकोंकोपीडाहोतीहै और व
डेआदमीकाम्स्तहोताहै और जेकरसवजरंगदीयारेखा उसदेविच
होनसजेपासे तांसुभिन्नहोताहै ४२ और उसदेविचमेलियां लाल
रेखाहोन तां सदाक्लेशहोताहै ४३ जो सजेपासेदासिराखेतहोवे यु
द्धहोवे वीचमेंएणामताहोवे और वामेपासेदे दोनोंसिरेखेतहोन
युद्धहोन ४४ तां देशदीस्वस्थता लोकोंकीस्थिरता घरघरमें मं।
गलकार्य औरअच्छादियांशुभखबरांसुणनियां एहफलनिश्चय
कनेहोताहै ४५ मुख्यमंत्रीवडेवजीरदीव्यवस्थाएवींकप्रकारसें।
जाननी और जोदेशदीतथादेशपति वडेहाकिमदीव्यवस्थादेख
णेदाप्रकारआगेलिखतेहैं ४६ जोझंडेदेवामभागदेउपरलेपा
सेलालीहोवें और दहिणेपासेदीवाखियालालनेहोन ४७ वा
मेपासेदीलालीउपरथोंहेठलेपासेवक्ततहोवे और कालियांरे
खांकनेयुक्तहोवे तांदेशपतिकोंएहफलहोताहै ४८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कुलैरेखाभिसंयुक्तातदादेशाधिपस्यवै ४८ आज्ञाक्रमेणदेशेहि
हिग्रामेतिनिश्चितं नभवेत्तियदारेखा:तदातत्परिवर्तिने ४९ सव्यपा
र्श्वशिरश्छेतंबिंदुरेखाभिरन्वितं शुद्धभावस्तयोस्माद्धः तत्कार्येस्थिरता
भवेत् ५० बिंदुरेखासंख्ययस्यदेशग्रामस्यनिश्चिता अथवेतस्यभागस्य
शिरसिच्छेतताभवेत् ५१ वामभागशिरःस्थानेनिःसाराश्थिसमीपगो त
त्रापिच्छेतंकृतान्तसमीपायसूरक्तता ५२ तदाज्ञावदफादेशेस्थितिर्हि
रिथनस्यत पेश्वर्यंचचिरस्यापिज्ञातव्यंसर्वदैवहि ५३ यदातुनगरेशा
नांतथातद्वशवर्तिनां आवस्थांज्ञातुमिच्छाचेत्तदाज्ञास्थिरतामपि ५४
वामर्थंवभवेद्रक्तंसव्यार्धेश्वेततांगते रेखाभिर्युतेचेत्स्यात्तदातुन।
गरेस्थितिः ५५

आज्ञाउसदीदेशविषेंक्रमसेंवृद्धिकोंप्राप्तहोतीहै और जेरेखानेहोन
तां उसजगायोंउसदीवदलीहोईजांदीहै ४९ जो दहिणेपासेदाशिर
चिटाहोवेबिंदु तथा रेखाकनेयुक्तहोवे तां सफाईरखसी उसदेकम्मां
दीस्थिरताहोतीहै ५० बिंदुतेरेखांदीगिनतीयां देशादीप्राप्तिइसकों
होतीहै अथवा इसकेउपरंत जेकरदहिणेपासेदेशिरउपरश्वेतता
होवे ५१ और वामेपासेदा जोस्थाननिःसारआस्थियांदेपासे अर्था
त् मारकनियांहड्डियांदेपासेहोवे सोवीचिटाहोवे और कृतान्
देसमीपलालीहोवें ५२ तद उसदीआज्ञादेशविचेंदृढताहोतीहै
और देशविचस्थितिधनदीवृद्धि और ऐश्वर्यदीचिरकालस्थिति
सदाहोतीहै ५३ जेकर नगरदेहाकम तथा उनांदेवशवर्ति आ
दमी तथाआज्ञादीस्थिरताजाननेदीइछाहोवे ५४ वामेभागा
देअर्धलालहोवे दहिणाअर्धश्वेतहोवे और रेखाकनेयुक्तहो
वे तां देशामेंस्थितिहोतीहै ५५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नगरस्याप्यभिप्रायतानेस्वल्पार्थलाभदं ततोन्यनगरेगत्वाबहुलाभो
भविष्यति ५६ यदातुमध्यभागस्थश्वेतोर्धरक्तोनागतः स्कंधदेशेविल
वाभिः श्वेतरेखाभिरन्वितं ५७ तथैववामभागस्थश्वेतश्वेतचविंदुभिः
रेखाभिश्चतथारक्तसवर्णाभिःसंयुतोभवेत् ५८ तदातत्तेनयद्दत्तंतद्देवा
बहुलभ्यते स्वयंस्थानमतिक्रांताः विंदुरेखाश्चहानिदा ५९ इतिश्रीम
न्महाराजाधिराजरणवीरसिंहाज्ञयाविश्वेश्वरविरचितेस्कंधास्थिप्रश्नेच
तुर्थोध्यायः ४ गृहस्यात्तुचरायेचयेचास्यगृहवांधवाः तेषामेवफल
तानेपंचमेप्रोच्यतेधुना १ स्कंधास्थिशिरसोमार्गेकंठस्कंधस्यपश्यपत्सुते
तत्रगतौवर्धितेवक्रेहेमस्त्रेशुभंतदा २ तत्स्थानेछिद्रसंयुक्तेवक्रितेवा
भवेत्तदा गृहेतोभयकलहोजायतेनात्रसंशयः ३

नगरदेअभिप्रायदातान् और थोडालाभफेरहमरेनगरमेंजावे तोबहुत
लाभहोताहै ५६ जददहिणेपासेदाशुखेअथालालहोवे मोढेलंवाई
पासेलंवमानश्वेतसल्लरेखाकनेयुक्तहोवे ५७ तैसेंहीवामपासेदा
शुश्वेतहोवे विंदु तथा रेखांकोलियायुक्तहोवें ५८ तदउसनेजो
दितादाहै किसीकोसोबहुतमिलदाहै जोरेखाअपणेस्थानसें अ
धिकहोन तोहानिहोतीहै और नुगसानहोताहै ५९ इतिश्री
मन्महाराजाधिराजरणवीरसिंहाज्ञयाविश्वेश्वरविरचितस्कंधास्थि
प्रश्नेभाषाटीकायांचतुर्थोध्यायः ४ घरदेअनुचरनौकर और घरदे
अपणेआदमी इनोंकीव्यवस्थापांचमेंअध्यायमेंकहतेहैं १ स्कंधा
स्थिदेशिरदेरस्तेविचकंठ अर्थात् धउीमोढेदीयोहै उसमेंगतचम
यादाहोवे तांघरदेसभमनुष्योंकोशुभफलदाअनुमानहै २
जेकरवहस्थानछिद्रकनेयुक्तहोवे अथवा टेढाहोवे तांकलह
लगई औरत्नोभदाअनुमानहै ३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कं॰ स्कंधकंठेयदाछिद्रंस्त्रीवेषसमंभवेत् अथिकंवातैरोगेहस्तेच्छाश्रुतः
टी॰ श्रुमान् ४ स्कंधास्थःस्थलभागस्यप्रांतेस्कंधाद्विपार्श्वके छिद्रंचेत्तुतदा
११ यस्तनाम्नास्कंधास्थिरुदृश्यते ५ तस्मान्मोयोजनःकश्चिन्मृत्युप्राप्नोत्य
15 संशयं महारोगयुतोवास्यादित्युक्तंपवनैःफलं ६ शिरोगभीरंस्कंधस्य
महागर्तयुतंभवेत् तदासमृत्युतेजायामहारोगयुताथवा ७ स्कंधा
स्थःकेंद्रतोहरेयत्रवृद्धिर्नदृश्यते तत्रसंघवागर्तोरहदासमृति।
प्रदः ८ अथवाजायतेरोगोप्रांतास्तेचेतयदा तदातुपावकादीनां
मध्यादेकस्यतत्फलं ९ विहारेणतदाज्ञेयंवृद्धहासोफलंविदं अथाद्रे
येत्रपार्श्वेचत्रिकोणवृद्धिमागतः १० तस्याग्रोपरिनिम्नयत्स्यानेस्कं
धशिरस्थयो तस्माद्विवाहवाग्दानमेवस्यानन्नेहभवेत् ॥

मोंढेदीवड़ीछीड़ाहोवे जिसविचस्त्रैछोटीअथवाबड़ीचलीजावे तदउसघ
रमेंइकआदमीस्वेछाचारीहोजावेगा ४ औरजोछानेदीमोटीजगाहै
उसकिनारेसेपहाड़वालेपासेपतलेस्थानमेंछिद्रहोवे तांजिसदेनामहो
छीताहै ५ उसदाकोईअपनाआदमीमृत्युकोप्राप्तहोताहै अथवारोगसे
पीड़ितहोताहै ६ जेकरमोंढेदाशिरडुगाहोवे औरवड़ेगर्तकनेयुक्त
होवे तांउसदीस्त्रीमृत्युकोंप्राप्तहोतीहै अथवावड़ेरोगकनेयुक्तहोती
है ७ मोंढेदेपहाड़ेयांहरजिथेतकवृद्धिहै उसविचछिद्रअथवागर्तहोवे
तांघरदेनौकरांविचइकदीमृत्युहोंदीहै ८ अथवाकठिनरोगहोताहै परंतु
उसकिनारेथांवहछिद्रवागर्दसमीपहोवे तांरसोया पाणीवाभरणवाले
वाला अथवादानेभुननेवालाआदिनौकरमरताहै हुरहोवेतांहररहणे
वालानौकरमरताहै ९ अथउसकेउपरंतजोरकरतेहैं छानेदेपहाड़देर
सेपासे जिसपासेत्रिकोणवड़ीहद्दिकोप्राप्तहै १० उसपासेकुपरऊक
यादाहोवे उसीस्थानमेंमुंढेदाशिरवीहै उसस्थानसेविवाहकुड़माई।
दाप्रबंधमानेहै ॥

प्रायोऽरूढिमेवाङ्गस्तस्यानंतद्विदोजनाः तस्यानाशेऽजुदोर्ग्रासाविवाह
दिशुभप्रदा ११ सावक्राछिद्रयुक्तावा तस्यहानिप्रदामता रूढेर्शिरः समर्धे
भागेछिद्रंवेत्स्वसदंमतं १२ तद्दनार्थंजपहोमंदानंकुर्याद्विचक्षणः स्कं
धास्थ्रदाहेप्यथवारूढिंपर्पेद्विचक्षणः १४ सानैवकिंचिद्देशेनतस्याने
चस्थिराभवेत् तदाशुभफलंज्ञेयंवाग्दानेचकरग्रहे १५ सायदादाह्या
मागच्छेद्रंधंरूढपतेस्तदा वाग्दानेचविवाहेचहानिर्भवतिनिश्चितं १६
जपदानादिकंसर्वंशान्त्यर्थंतस्यकारयेत् अथाशकोलिकामन्त्रेस्वरूक्तान
समस्तुवे १७ स्कंधायोलत्तुरूढेस्यपार्श्वेयत्रभयोद्युतिः सेदयोलक्षवे
ब्वामेसेनताशकमेववा १८ विघ्नंभवेत्तदागेहेदुःखंलेयंजनायवै त
दोषपरिहारार्थंदानंविमानुसारतः १९

प्रायावक्तनकरकेउसीरूढीसेंविवाहकुडमाईदाअनुमानहै जेकरउसरा
स्थानमेसोरूढिसीधीचलीआईहोवे तांविवाहकुडमाईदीअवस्थावकु
तवंगीहै शुभफलहै ११ जेकरसीधीनैहोवे अथवाछिद्रकरकेयुक्त
होवे तांविवाहकुडमाईदीहानिहोतीहै मुख्यकरकेजेरूढिदेशिर
उपरछीद्रहोन तांउसदीनस्तदाअनुमानहै १२ उसदीरक्षावास्ते
जपपाठदानआदिकरने और छानेकोंजलाना जेकररूढिज
लैनै अपणेठिकाणेबनीरहे तांबीविवाहकुडमाईदीअवस्थाचंगी
है १४ औररुक्ष्यतादावीअनुमानहै औरजेकररूढिजलीजावे
और गिरपैवे तांहानिदाअनुमानहै विवाहकुडमाईविखे १५
उसदीरक्षावास्ते जपदानादिकरनेचाहिये औरजाननाचाहिए
जेकुतानदेसमीप मोफदीकोलीदेवासमीप १६ औरमोंढेदेनीवे
ढोदीरूढिदेपासजिथ्येदोनांभेदमिलेहैं उसजगामेकालाअथवाचि
टालालरंगहोवे १७ तांउसघरमें आदमियोंकोदुःखदाअनुमानहै
उसदीशांतिवास्तेविमानुसारदानकरनाचाहिये १९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कं: उह्लाष्व्रहषभा:देया स्ववर्णौस्जंतेतथा उह्लाद्यभावे मेषाद्ये देयाल्लग्न
टी: भमिछता १९ इति श्रीमहाराजाधिराजरणवीरसिंहाज्ञयाविद्वद्भिर
१६ विरचिते स्कंधाख्ये ग्रंथे पंचमोध्यायः ५ अथ गामिनि वर्षेत फलं कीदृ
कं भविष्यति तथैव हानिवृद्धी अस्मिन्नध्याये निरूप्यते १ शुभे स्थाने तु स्कं
धादेर्यदि स्त्रस्थानमीरितं तत्र चिह्नं यदि स्यात्तदा तद्वस्तु वृद्धिदं २
स्वेतनाशपामिका मिथ्यातस्य हानिप्रदा मता पामिकाग्रे श्यकस्यैत।
विह्नं चौरभयप्रदं ३ अदेः पार्श्वयोर्विभागे संतिमस्थानगा यदा पपा
मता चेत्तदा सैन्यचौर्यवातादिभीतिदा ४ अनादिपशुसंघस्य स्वस्थाना
न्पलायने चेत्समतो भये पार्श्वे पशुवर्जेशुभं तदा ५ स्थानद्वयेश्यके
स्याक्त्वामिकाविडसंयुता।

उठयोजवेलस्तनाचांदीदानकरना जेकरउठ्योजवेलनेमिलन तोभे
डवकतसोरनीनचारआदिदेणा ६ इति श्री स्कंधाख्ये ग्रंथे पंचमोध्यायः ५
अथ इसके उपरांत आगामी वर्ष में क्या फल होवेगा कि सवस्तु की हानि
और किसकी वृद्धि होवेगी यह तान छे में अध्याय में कहते हैं १ यद
पहाड देनक में जिस पदारथ दे साथ संबंधरखने वाला यो स्थान
है उसमें काला विह्न होवे तो माल दी वृद्धि होती है २ जद सपेदी म
यां स्याही कि ठोमिली दी होवे तो माल दी हानि दा कारण है का
ले विह्न दे आगे सपेद चिह्न होवे वखरा होवे तो चौरां दा भय होणा
है ३ जेकर पहाड वाले पासे यो हेठल वेदा तेगजगामें स्याही
होवे तो सेना वायु चोरांथों भय होता है ४ इस भय थों पशुस
मूहन सने सेना दा अनुमान है जेकर दोनों पासयां स्याही होवे
तो मेषादिपशुसमूह को स्वस्थता और सुखदा अनुमान है ५
जेकर स्याही दोजगामें वखरी वखरी होवे और विडवी होन तो पा
शुसमुदायको नो भदा अनुमान है ६

16

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तदानुमीयते लोभः पशुसंघस्य निश्चितं ६ श्यामता श्वेतता वा वेद
म वर्णेन मिश्रिता एकस्य चेत्स्यात्तापीडा पशुवर्गस्य वै तदा ७ रक्तया
स्याद्विमिश्रमारभ्य नत्राभारधिकं यदा श्यामता वै तदा तस्य पशुवृद्धि
करी मता: ८ तत्रैव श्वेतता स्वीयप्रमाणेन युता भवेत् पशुरत्तस्य
दानेया खल्वशांते कृशावद ९ रक्तया पोस्य दरस्यैव सोमाये यदि दृ।
श्यते श्यामता वै तदा तेयो मेषाणां क्रयविक्रयः १० रक्तता तत्र मेषा
दिपशुरक्तस्य दामता चेद्भवेत्पीतता तत्र तदोस्यात्तातिरितजाः ११
इति श्रीमहाराजाधिराजरणवीरसिंहाज्ञया विश्वेश्वरविरचिते रक्त
पाथिप्रश्ने षष्ठोध्यायः ६

स्यामता अथवा श्वेतता कोई रंगके नेमिलीदी एक जगामें होवे तां पशु
समूह कों पीडा दा अनुमान है ७ जेकर छाने दे पहाड थों लेके छाने
दे किनारे तक स्यामता होवे तां छाने दे स्वामि दे भेड तथा होर पशु
वों की वृद्धि दा कारण है ८ और जेकर उसी स्थान में अपणे प्रमाण
मूजव सपेदी होवे तां पशु समुदाय कों रक्षा दा अनुमान है और जे
कर छाने दे किनारे तंग होन तां पशुवों कों कृशता दा अनुमान है ९
मों फ़ेदे हेठ इसी तरदी सीमा दे आगे स्याही होवे तां भेडवां के वचने
तथा खरीदने दा अनुमान है १० उस स्थान में लाली होवे तां मेषादि
पशुवां कों रक्षा दा अनुमान है जेकर पीलता न होवे तां आकाशीय
उपद्रव होते है प्लीवर्षा आदि इसकों हजार देशवासी जवली कह
ते है जो बाहर से आवे या देवदेवने से आवे या देन जाने से आवे अथवा का
स्तर हत्र जामें होवे ११ इति श्रीमहाराजाधिराजरणवीरसिंहाज्ञया
विश्वेश्वरविरचिते रक्तपाथिप्रश्ने षष्ठोध्यायः ६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हिमाभ्रशस्पाणां वृद्धिर्हानिश्च सममे कथ्यते याल्पवृष्टिस्तु दुर्भि
क्षस्य च कारणं १ समभूमेस्तथा देशस्य तथा तडागजीविनां व्यवस्था।
मनुजादीनां शुभाशुभाय दिवा शुभम् २ यद्दिग्पार्श्वे तिर्यक्स्थास्तं पार्श्व
स्यार्धभागके तत्र निम्नप्रदेशे चेद्ब्रै संद्यश्शलमानतः ३ तस्मिन्वर्षे
महावृष्टिः समस्ता हानिश्च जायते मिलिता शष्पाभिकाम्बला दृश्यते ते
नैव यदा ४ तस्मिन्वर्षे महावृष्टिर्हिमं च बहु दृश्यते तत्रातिश्वेतता वा
स्याज्जलवर्णसमाथवा ५ तदा च हिमपातेन दुर्भिक्षं जायते ध्रुवं
यदा संपार्श्वयोर्भागः सच्छिद्रो दृश्यते बुधैः वायुवृद्धिस्तदा ज्ञे
या मेघसंगस्तथैव च ६ तत्प्रान्ते लघुछिद्रे चेत्तदा दुर्भिक्षं मतं सम
भूम्याहिमस्थानां व्यवस्थैवमेव हि ७

सातमे अध्यायमें बर्फ बद्दल और अबादी और खेतियां धान्य और इनां
दा विपर्यय जनां तुमको और महर्घ ये दुर्भिक्ष अल्पवृष्टि इनका ज्ञान १
पहाड़ तथा समभूमि दी अवस्था और इनके साथ संबंध रखनेवालो
मनुष्यों की अवस्था शुभ वा अशुभ देखनी चाहिये २ जानना चाहिये
जेकर पहाड़ दे तिरछे पासे छाने दे उपरले किनारे नीमे स्थान में दो अं
गुली प्रमाण सपेदी होवे ३ तो उस वर्षमें वर्षा बहुत होवेगी अन्न अच्छा
नहीं होवेगा अथवा जेकर शष्पा ही मिली दी उस स्थान में होवे ४ तद
उस वर्षमें वृष्टि बहुत होवे और बर्फ बहुत गिरे और जे उसी स्थान में
अत्यंत सपेदी होवे अथवा जलके रंगके सदृश होवे ५ तद बर्फ का
ठिन पडने थीं महर्घता वा काल पडने दा अनुमान है और जो छाने दे
नीचे छिद्र होवे तो अनुमान वायु बहुत होने दा और मेघ उबकेरे या देस
भूर अर्थात् पगउदा अनुमान जानना ६ जेकर छाने दे किनारे छोटा
छिद्र होवे तो दुर्भिक्ष और रंजपीदा अनुमान है इसी तरह समभूमि तथा
पर्वत और स्थानां और खेतियां की हरयाई इनकी अवस्था जाननी ७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

येषांसंबंधियत्स्थानेतत्रचेच्छामता भवेत् सस्यवृद्धिस्तदाज्ञेया हा।
नि:स्याद्व्यमतायदि ८ एवंविवाहवादानस्थानेचेच्छामिकान्तदा त
योग्यकुशलंज्ञेयंस्वमाज्ञेयोविपर्ययः ९ स्कंधास्थ:सव्यभागार्थे दृ
श्यतेकृष्णबिंदवः तेवारकेनवर्णेनकिंचित्संबंधकारकाः १० वाम
पार्श्वेतथाकृष्णबिंदवःसंभवन्तिहि महाहृष्णातदासस्यहानिर्मारी
भयंतथा ११ स्कंधादारभ्यशिरसिरक्ततायदिदृश्यते सव्यपार्श्वेच शि
रसःकालिमाभवतिध्रुवं १२ बिंदुरेखाभिरहितंशेषंवेद्दृश्यतेतदा
वर्षंज्ञेयामहावृष्टिभीत्याल्पवृष्टिरथवा १३ सव्यपृष्ठेयदारक्तारक्त
रेखाभवन्तिचेत् कृतानांसन्नगाःस्कंधप्रान्ताननरभागगाः १४

जोस्थानइनकेसाथसंबंधरखताहै उसमेंजेकरस्याहीहोवे तांखेतियां
वहुतहोवेगियां औरजेकरसुपेदीहोवे तांखेतियांकाअभाव औरसम
झ्मिसकनेदाअनुमानहै ८ इसीतरहविवाहकाउमाईदेस्थानथांवि
वाहकाउमाईदीअवस्थामलूमकरनीचाहिये जेकरउनकेस्थानमेंस्या
हीहोवे तांउनकीकुशलताजाननी जेकरसुपेदीहोवे तांउनकीहा।
निजाननी अनवस्थाअज्ञानताजाननी ९ जेकरछातेदेसज्जेपासेदेस्क
ंधविचकालेबिंदुहोन अथवाओरबिंदुलालगीदेसाथकिंचित्संबंध
रखतेहोवें हमेरापासेहरतक १० औरखबेपासेकालेबिंदुहोन तांवहु
तवर्षादाअनुमानहै औरवर्षाहोनेवालीवस्तुकीथोडीहानिहोवे और
थोडीमौतपवे ११ जेकरसिरातुंडेथांलैकेअंतनकलालहोवे औरसिर
सज्जासाराकालाहोवे १२ औरसारेस्थानअयथास्थितबिंदुओररेखासेरहि
तहोन तदउसवर्षमेंवर्षावहुतहोवे अथवाभीतवहुतहोवे उससेपशु
वोंकीमरनहोवे १३ जेकरसज्जेपृष्ठमेंलकीरांपतलियांलालरंगदियांम
फाहोन औरकृतानदेसमीपमुंढेदेअंततकहोन गेरहसरीतफीवीउन
कासंबंधहोवे १४

स्कं॰
टी॰
१८

18

तथैवृवामपार्श्वे चरक्तारेखा भवंतिच शेषश्चांतेतथा रक्ताः सुणामा
ञ्चहिंदवस्तथा ॥ १५ शेषदृष्टंभवेत्स्वच्छंमध्ये स्पर्शेतदावदेत् दृष्टेस
मतेकृतसैरस्थविंदुभीरक्तकैस्तथा १६ समाहृष्टिस्तथारात्तांसेपिस
वहूवर्षेण वर्षसांतेविजानीयाद्दक्षांघ्रेनेनतास्वरैव १७ सव्यपार्श्वे
यदाञ्जस्नेतदारोगभयंभवेत् स्कंधास्थ्नोदेहपरिवेत्कसारेखादि
तोंतगाः १८ वामपार्श्वेशिरस्विवक्तस्याप्ववर्तरेखिकाः तदाल्पवृष्टि
र्दुर्भिक्षंपापादीनांमरचेता १९ स्कंधास्थिरष्णते यस्यानाम्रस्तस्या
वेरदिदं देशेमहारोगभयंभस्तुर्दुर्भिक्षमेवच २० स्कंधस्यसव्यपृष्ठे
वेदेखास्थूलभवंतिचे क्रमहारिंगतादेश्चेवामविंदुत्रयंयदा २१
एकःपृष्ठेतदाक्तोरेखाभिस्रफलंविदं सर्वेषामेववरत्नानांतस्मिन्नदे
महावेता २२

औररववेपासेरेखा सिरदियाँआदणयोंअंततकरखेहोन ताकी सिरेदेविं
दुस्याहहोन औरलालहोन १५ वाकीपृष्ठसफाकोमलस्पर्शवालीहोवे
तदकालेविंदुवोंसेसमवर्षाहोगोदाअनुमानहै औरलालविंदुवोंसेदा
अनुमानहै १६ वर्षासामान्यहोन औरराजयोंकीसुलाकातहोवे औरव
र्षदेअंतमेंवहुतवर्षाहोन औरअन्नादिकोंकरकेलोकसुखीरहै १७ पर
तसज्जापासाजदक्षस्महोवे तोरोगदाभयहोगाहै स्कंधास्थिदेपहाउ
देउपरकालीरेखाआदण्योंअंततकहोन १८ औरवामेपासेदासिरावी
रसतरहदाहोवे परंतुहसरेपासेदेनजीकहोवे तांथोडेवद्दलहोन अथ
वादुर्भिक्षहोवे अथवाअन्नांकीमहरचेताहोवे १९ परंतुजिसदेनामका
छातादेखाहै सुखकरकेउसदेदेशविचकठिनरोगसेंमस्तहोनी कालापै
णापहफलहोतेहैं २० जेकरसुफेदसज्जेपासेलालरेखांचौडियांहोन तां
औरअक्रमहादिकोंनाशहोवे औरवामेपासेतीनविंदुहोनकालेलंवाईमें
होन २१ एकहोरपीछेहोवे तांलालरेखांथांअनुमानउसवर्षमेंसस्तीवस्तु
वांकेअछेहोनदाहै २२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्वङ्गात्रुट्दृष्टिर्ज्ञातव्या कृष्णविंदुभिरेव च वेत्सव्यभागे शिरासिरके रेखा
शुभं भवेत् २२ एका स्कंधे परास्कंधे वामभागोपरिस्थिता निःसारा
स्थिपुत्ता च स्याद्रक्ता भवति ध्रुवं २४ ऊर्ध्वभागे कृष्णविन्दुर्मध्ये तस्मि
न्समफलं यदा दक्षिणभागस्य शिरसिरके रेखिकाः २५ तिसृभिः कृ
ष्णरेखाभिः संयुक्ताभिश्च संयुताः सव्यभागात्तु स्कंधांते रेखाश्चा
पि दृश्यका यदा २६ तदा देशांतरात्प्राप्य वस्तुभिक्षासमन्विता तस्मि
न्स्थाने च दुर्भिक्षं तत्र धान्यादीनां भयं नहि २७ इति स्कंधास्थिप्रश्ने सप्त
मोऽध्यायः ७ चौराणां चोरितस्यापि व्यवस्था कथ्यते इमे स्कंधस्य शिर
सः पृष्ठे चौराणां लक्षणं यदा १ स्कंधाधः खड्गभेदेन कृतानि स्थिरमस्त
के तदा चौरागमो वाच्यः पृष्ठस्य पृष्ठभागतः २

और काले विंदुवों से दुष्ट ग्रहों की दृष्टि और स्थिरता का अनुमान है और जब
सजे पासे देखिये दो रेखा लाल होवें २२ एक रेखा कंधे में दूसरी कंधे के वामे
पासे देखिये ऊपर होवे और सरक नी हड्डी देखा [illegible] रेखा होवे २४ और सि
रे दे विच काला विंदु होवे तद समान मध्यम होवे उसकी स्थिति उसी वर्ष में होवे
काले विंदु से यह अनुमान है कि उस वर्ष में धान्यों का भाव मध्यम रहता है
और जब दहिणे पासे देखिये में लाल रेखा होवें २५ और उनके बीच तीन रेखा
कालियां होवें परंतु वह ये रेखा आपस में मिली दी होवे और सजे पासे थों
ले के कंधे तक भिन्न भिन्न होवें २६ तद वाहर से देशांतर से अन्नादिक व
वस्तु आय के समाश्रयिक वेगा होवेगा और उस जगा में दुर्भिक्षादिक भ
य नहीं होता है २७ इति श्रीमहाराजाधिराज रणवीरसिंहाज्ञया विद्याधर
विरचिते स्कंधास्थिप्रश्ने भाषाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ७ अथ अष्टम अध्या
य में चोरों की अवस्था और चोरी की वस्तु की व्यवस्था कहते हैं यदि चोरों का
लक्षण कंधे दे पहाड़ दे सिरे दे पीछे होवे १ और कंधे दे हेठ खोर भेद में
कूतान दे सिर में होवे तो चोर दे आवणे दा अनुमान चोर दे पीछे से है २

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यातेवार्येनयातीत्पापृष्ठभागागतेवदेत् विशालभागेतह्लक्ष्माद्दृष्ट्वा
मन्नष्टहेवदेत् ३ श्वेतविहृयदाहष्टेकिंविन्दौयौवदेत्तदा परकीयस्य
वेह्लात्मदृश्यते चतदावदेत् ४ मनुष्येनरवस्तूनालब्धिप्रमत्तमेव।
हि श्यामतातस्करस्थानेतस्कराणांवलंतदा ५ रक्तताचेत्तदारक्त
स्रावहेतुःप्रतीयते ह्यानिर्वेधनदाश्रोक्तास्वेततनायदिदृश्यते ६ इति
स्कंधादिग्रन्थेअष्टमोध्यायः ८ पांथानांचसमूहस्तुनःसमभूमिस्थित
स्यच समभूम्यागतेकानांअवस्थानवमेस्मृता १ पथांसंवंधियत्स्था
नेतन्नोपस्थेहिवलानः तत्स्थानेश्यामविह्नानि पांथसौख्यकराणिवै २
सोतेत्वगमनेतेषांतथाक्रोधाद्दृथक्स्थितिः रेखयारक्तेतकलहोरु
धिरस्रावएवच ३

इसीतरहसेंजोचोरीहोईहोवे तोचोरीकरनेवालापीछेंसेआयाहोवेगा और
विस्तृतभागमेंउसकाचिह्नहोवे तोचोरउसीस्थानेरसमीपघरमेंहोवेगा ३
जेकरसपेदचिह्नहोवे तोथोड़ीचोरीहोईहोवे इसवातकाअनुमानहै जेक
रलत्तणकुसेवखलेदाहोवे उसथोंप्रतीतहोंदाहै ४ किमनुष्योंसेविना
जीवआदिसंपूर्णवस्तूदृष्टिगोचरऔरप्रमत्तहै औरजेकरचोरोंकेस्था
नमेंस्याहीहोवे तोचोरोंकावलहोताहै ५ जेकरलालीहोवे तोअनुमान
लहूवगणेदाहै जेकरसपेदीहोवे तोकुशलताहोनी औरपकडेजानाचो
रोंकाअनुमानहोताहै ६ इतिस्कंधादिग्रन्थेभाषाटीकायांअष्टमोध्यायः ८
नवमप्रकरणमेंराहचलनेवालेमनुष्योंकेसमुदाय औरसमभूमिमेंस्थित
होनेवालामनुष्यसमुदाय औरसमभूमिसेंआवनेवालामनुष्यसमुदाय इ
नकीअवस्थाकहतेहैं १ जोस्थानइनकेवास्तेनियतहै इनकेसाथसंवंधरख
ताहै उसमेंदेखनाचाहिये जेकरउसस्थानमेंकालेचिह्नहोन तोपथिकजनों।
कीकुशलतादाअनुमानहै २ जेकरश्वेतचिह्नहोनतोपथिकसमुदायकाने।
चलनेदाअनुमानहै औरराहचलनेवालेसमुदायकोआपसमेंक्रोधहोनेसेवखेरे २
होनेदाअनुमानहै औरजोलालहोनतोउनकीलड़ाईहोतीहै औररुधिरवगनेदा
अनुमानहै ३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वेलंवेरवासदृशंलक्ष्यविद्धंप्रदृश्यते अथवाधूलिसदृशंपांथस्य
संवदेनदा ४ पतहलमवकृतानसीमायांशत्रुपार्श्वके संध्यासुपरि
वाचेसूर्यातमलंदृष्टौरिनतदा ५ संध्याद्वेरणामतानोचेनदाज्ञेयोहि
संगमः समभूस्यन्देहृदस्यपांथसंज्ञस्यचैवहि ६ धूलिवर्षोथवा
रोगानसिमिमीतेभवेद्ध्रुवं यदानरणाममाशांतेसमीपपथिकात्तदा १
इतिस्कंधाधियप्रश्नेनवमोध्यायः ९ नगरस्यअवस्थायामध्यायो।
दशमःस्मृतः नगरस्ययदास्थानेरक्तताहृश्यतेतदा १ नगरेतत्रक
लहःप्रवाहोहुधिरस्यच जनानांचमिथःतोभोभविष्यतिनसंशयः २
मासैभयंमहद्वैवसेततायांभवेद्ध्रुवं स्वलक्षणमिकयालज्ञाधिपस्य
वलवर्धनं ३
औरजदखडीरेखादेनलक्षोदायेसाचिह्नदेनेमेंआवेतै अथवाधूलिदे
सदृशचिह्नहोन तांपथिकोंकेमारेजानेदाअनुमानहै औरचाउहोने।
दाअनुमानहै ४ औरजदपहचिह्नहतानदीसीमापरशत्रूदेपासेहो
न औरजेकरछानेदेपहाडपरहोवे तांवीएवेंकहीफलहोताहै ५
जेकरछानेदेपहाडमेंथोडावीकालाचिह्नहोवे तांअनुमानइसवा
तकाहै किसमभूमिमेंस्थितरहणेवालेजोमनुष्यहै औरराहचलने
वालेयोमनुष्यहै इनोंकीआपसमेंमुलाकातहोतीहै ६ यदपीलेचिह्न
होनतांधूलिवर्षाहोतीहै अथवारोगहोतेहै जेकरकिनारेमेंएपाहीहोवे
तांराहचलनेवालेसमीपआयेहोवेंगे एहअनुमाहै इतिस्कंधाधियप्रश्नभाषा
टीकायानवमोध्यायः ९ अथदेशकीशुभाशुभअवस्थादेखनेमेंदशमाध्या
यकहतेहैं जदनगरदेवास्तेछानेमेंजोस्थानहै उसमेंलालीहोवे १ तद
उसनगरमेंकलहकालडाईहोतीहै औरहुधिरवगताहै गेरनगरके
लोकोंकोत्तोभहोताहै २ औरस्वेततताहोवेतांमारीदाभय औरअन्नादि
कवस्तू उसनगरमेंमंगीहोतीहै औरजो उसस्थानमेंथोडीश्यामताहो
वे तांउसनगरदेकारदारोंकावलवधताहै ३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कं: तथैवनगरस्थानांवृद्धिर्भवतिचोत्तमाः यदातत्रस्वामिकामध्येभवं
टी: तिरक्तविंदुवः ४ तदातत्तनगरेतत्रकलहान्तोभमादिशेत् केवलेस्वा
२: मिकातत्रसर्वेषांदुःखदामता ५ इतिस्कंधाख्यिप्रश्नेदशमोध्यायः १०
अथस्थानास्थानुचरास्थानांवस्तुस्त्ववर्तिनो आत्मीयानांपरेषांचव्य
वस्थात्रनिरूप्यते १ येषांसंवेधियत्स्थानेसंधंतेःयश्वविस्तृतं तत्स
मीपेवृद्धस्थेरेतेत्वंगुलमानतः २ तत्रहृद्वारसीमेतिवदंतिखंडि
तेहियत् सरलेस्मिन्सुखंतेषांवक्रेदुःखंवदेद्ध्रुवं ३ क्रकचेनसमं
विद्धंशहस्थानेप्रदृश्यते तदायनापहारेणतेषामापद्भविष्यति ४
स्वामिनाद्वयमध्यस्थशुक्लविंदुर्भवेद्यदा चौरैस्तोग्निदग्धोवागृहेशोर
हमेववा ५
औरउसनगरमेंवसनेवालोंकोंवलपुष्टिवृद्धिहोतीहै औरयदकालेरंग
देमध्यमेंलालविंदुहोत ४ तोउसदेशदेलोकोंकोऔरप्रधानलो।
कोंकोलडाईऔरक्षोभताअनुमानहै औरयोकेवलस्याहीहोवे तो
संपूर्णलोकोंकोदुःखदाकारणहै ५ इतिस्कंधाख्यिप्रश्नेदशमोध्यायः १०
यारमेंअध्यायमेंचोडेयोंकेस्थान औरचोडयोंकेनोकर औरचोडे
औरघरमेंरहणेवालेअपणेआदमी तथावरखलेआदमी इनोंकी।
शुभाशुभव्यवस्थाकानिरूपणकरतेहैं १ इनोंकेसाथ्यजोस्थानसं
वंधरखतेहैं अर्थात्मुंफेदहेउलेकिनारेमें विस्तृतभागकेसमीप।
जोवडीवृद्धिदेअंतलेपासमेंहै यहस्थानएकअंगुलप्रमाणहै २ इस
कोघरकेदरवाजेकीसीमाकहतेहैं औरवकृयावहस्थानकिंचित्
खंडितहोताहै जेकरयहसीधाहोवे तोइनकोंसुखहोताहै और जे
करटेढाहोवेतोदुःखहोताहै ३ घरकेस्थानमेंआरीकेसमानचिन्ह
होवे यनपदार्थलूटजाना औरखरावहोनाआदमियोंकाअनुमानहै ४
जेकरदोस्याहीकेवीचसपेदीहोवेतोचोरोंकरकेलटजानना अथवा
अग्निसेदाहहोनाघरका अथवाघरकेस्वामिकाअनुमानहै ५

गृहस्थानेयदाचिह्नं ७८ मेतदाकारकंभवेत् एवंयवनशास्त्रता
श्रावेप्रवदंतिच ६ अस्मान्मनुष्यलब्धिश्चरहस्तेजोवाहूदितमा ७
इतिसंपाख्येप्रश्नेएकादशोध्यायः ११ रोगिणश्चिंतितेसर्वेद्वादशे
शुभाशुभं चिह्नत्रययुतातत्रश्यामतायदिदृश्यते १ तदाभविष्य
तिरुजोनिवृत्तौनरोपति उह्यपालसमेचिह्नस्यातदाश्यामताएथ
क् २ पूर्वचिह्नस्यसदृशीतदारोगीनजीवति श्यामतातत्समाचेत्स्या
च्चिराद्रोगोनिवर्तते ३ दैर्घ्ययवाधिकंचिह्नं । चेत्तदात्तायतेउच्चैः
विद्याप्राप्तिनिश्चयेनपुत्रोत्पत्तिलक्षणेवच ४ मध्यसंधेयदारक्तवर्णा
रेखाप्रदृश्यते तथैकपार्श्वेसंयोगोनिःसारास्यायुदाभवेत् ५ कृता
नपार्श्वेवास्यातोवामपृष्ठेचकृष्णता तथैवसंधेपार्श्वस्यसंयोगोपिन
दृश्यते ६
जेकरघरमेंचिह्नस्याहीका ७८ ऐसाहोवे जिसकोअर्बीमेंशावकहतेहैं ६
इसचिह्नसेमनुष्यकेलाभकाअनुमानहै औरजेकरऐसा । चिह्नहोवे
तोवडियाईप्राप्तिहोतीहै ७ इतिसंपाख्येप्रश्नेएकादशोध्यायः ११
रोगियोंकाशुभाशुभफलबारहमेंअध्यायमेंविचारतेहैं जेकरघरके
स्थानमेंश्यामताहोवे औरउसकेबीचमेंत्रयचिह्नहोवे तोअनुमानऐसे
रोगकाहै जोहटजानेवालाहै औरजेकरउद्ये चिह्नउठचारनेवालाहो
वे अथवास्याहीपूर्वोक्तचिह्नदेतुल्यबराबरहोवे २ तदरोगीनेजीवना
है औरजदश्यामताबराबरहोवे तोरोगचिरकालरहनेवालाहोताहै
परंतुपीछेसेस्वस्थताहोजानेकाअनुमानहै ३ औरजेकरचिह्न । यव
सेअधिकहोवे तदविद्वानलोकविद्याप्राप्तहोनेकाअनुमानकरतेहैं
औरपुत्रप्राप्तिकाबीअनुमानजानतेहैं ४ जेकरसंधेमोंफेदेबीचमें
लालरेखाहोवे औरदोपासयाविच इकपासाजुरकनीहट्टीकनेजु
कहोवे ५ औरअंतउसदाकृतानदेपासेहोवे औरवामेपासेदीपृष्ठके
बीचकालाचिह्नहोवे औरउसदासंयोगमुफेदेपासेनेहोवे ६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कं· दक्षपृष्ठे रक्तवर्णे दीर्घरोगस्य कारणं लग्नस्य देहे पीयूषस्य कारणं चात्र
टी· मीयते ७ वामपृष्ठे कृष्णचिह्नं नैव केनापि संयुतं यदा भवेत्तदा रोग
२१ निवृत्तिर्मानवर्धनं ८ निःसारास्थियुतं वामपृष्ठे कृष्णं तु लांछनं कृ
तान्तपार्श्वगं वा प्रहृतं यदि दृश्यते ९ दक्षपृष्ठे रक्तचिह्नं संयुतं नैव
केनचित् तदानुमीयते पीडा भूत्वा चापि निवर्तते १० स्कंधसीमागतं द
क्षपृष्ठार्धे विस्तारार्थके रक्तवर्णो भवेत्सर्वं संयुक्तं चेद्भवेत्तथा ११ का
लाश्च विंदवः स्थूलाः वामभागे भवंति चेत् रक्तता दीर्घरोगस्य हेतुः
कृष्णैस्तु विंदुभिः १२ अंते रोगनिवृत्तिः स्यान्मरणं दैवयोगतः १३ इ
ति स्कंधास्थिप्रश्ने द्वादशोऽध्यायः १२ राज्यासनस्य शत्रोश्च युद्धस्य लं
ठनस्य च अवस्था प्रोच्यते यत्र तत्र येनेषा बलाबलं १

और दहिणे पासे दी पृष्ठ में लालगी थ्यां अनुमान चिरकाल रोग होने दा है और
रोगी को मिथ्यल होने का वी अनुमान है ७ वामे पासे काला चिह्न किसी सें
संयुक्त नै होने से रोगी की स्वस्थता और मान वृद्धि दा अनुमान है ८ वामे पृष्ठ में
काला चिह्न मुडनी हड्डी से संयोग करता होवे और बहु कृतान्त दे पासे पहुंचने
वाला होवे ९ और दहिणी पृष्ठ में लाल चिह्न किसी से संयुक्त नै होवे इसथ्यों अनु
मान है कि थोडी पीडा कर हट जावे १० जे कर दहिणे पासे दी पृष्ठ का अर्ध मुंढे
दी सीमा दे साथ संयोग करने वाला चुडा के आये में सारा लाल होवे और मिल
या दा होवे ११ और वामे पासे वडे वडे विंदु काले होन तद लालगी से अनुमान रोग
चिरकाल रहने दा और मरने दा है और काले विंदुवों से अंत में रोग स्वस्थ साध्य और
पीडा निवृत्ति का है १२ फेर पीछे सें रोग हट जाने थ्यों उपरंत दैवयोग से मर जावे
तो ईश्वर की इच्छा है १३ इति स्कंधप्रश्ने भाषाटीकायां द्वादशोऽध्यायः १२ अब त्रयो
दशाध्याय में क्या क्या विचार करना सो कहते हैं तक अर्थात् राज्यासन और शत्रु
और युद्ध लोटि और अपणे तथा शत्रु दा बलाबल इनां दे फल दी अवस्था इसमें
कहते हैं १

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विलोक्यते फलं चैषां विस्तृतादेव भागतः पतत्स्यानुसृतं हेतिसंज्ञा ए
वंसुदाहृता १ स्वपार्श्वः शत्रुसृष्टं तल्लातद्राघयोदितं तद्यस्य भागल
घुत्वेनस्य निर्बलतोदिता २ प्रथमं विस्तृतं यस्य ततो ग्रे लघुतां गतं यस्य
भागे भवेदेवं सोपि दुर्बलतां व्रजेत् ४ लघुरेखास्त्रयो यस्य भागे चैव पृथ
क्पृथक् तस्य मत्तस्य घातः स्याद्बुधैर्ज्ञेयो विचक्षणैः ५ सेनानगरदेशानां
स्थितिर्यत्प्रमाणतः समीपे स्युः शुद्धाराद्यावच्चाप्यहूरतः ६ एवं
मैत्र्यादिफलमीयते निर्बलादिकं तावत्कालेन वै तत्र यत्र ठने निश्चये
नव ७ यदास्य मध्ये शत्रुपार्श्वे दृश्यते एव वक्फलं तद्भागांतरं गरके थैस्य।
वा मध्यमे भवेत् ८ स्वसीमांतस्य तुह्येत्पर सीमागतं यदि स्वबलस्य
लं ज्ञेयं परस्याबलता मता ९

इनोंदा फल विस्तृत भाग सें ही होता है इस विस्तृत भाग की यवन भाषा में तला संज्ञा
है सो पीछे कही आये हैं २ छाती दी सीधी पीठ को उस भाषा में तलाक कहते हैं सो
जिसके पास छोटी होवे उसको निर्बलता होती है ३ अथवा जिसके पास प
हिले विस्तृत होवे आगे छोटी होजावें सो भी दुर्बलता को प्राप्त होता है ४
और जिसके भाग में ऐसी ।।। छोटी रेखा त्रय वखरी वखरी होन उसको मृ
त्यु अथवा घात होता है एह बुधिवानों ने जानना ५ अपणी सेना नगर देश
की स्थिति इस दे दरवाजे से जितने समीप होवे और जितने दूर होवे शत्रु
के द्वार सें ६ इसी तरह स्वन चिह्न में वी अनुमान करना अर्थात् जितने
समीप होवे तां थोडे काल में जे दूर होवें तां वहुत काल में निर्बलता आदि फल
होता है ७ जेकर शत्रु पासी उस विच उत्पन्न होवे तां निर्बलता मन में संताप और रो
टी निश्चय करके होती है जेकर शत्रु पासी उस पासे अंदर होवे अथवा अथमा
पासे सपेदी उत्पन्न होवे ८ अथवा समीपता पर होवे अर्थात् अपणी
सीमा यों लंघी के दूसरे दी ऊपर आवे तां अपणी सेना दा वल जानना और
शत्रु दी सेना को निर्बलता जाननी चाहिये ९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कंधस्यदक्षिणंपृष्ठंरक्तंयुद्धकरंमतं संयुक्तंकृष्णरेखाभिःवामंस्कंध
स्कं० करंभवेत् १ दक्षभागशिरःरेखायुक्तंवामंचशोणितं तदानिरोधोया
टी० तम्मशत्रूणांस्वजयस्तथा ११ वामभागशिरःशोणंपरसैन्यविनाशनं
२२ स्कंधास्यःश्यामतामांतेसैन्योथानस्यकारणं १२ यदास्यमध्येश्यामत्वम
वेद्यंगुलमानतः स्वास्थ्यंनगरसैन्यानांज्ञेयंश्रेष्ठविचिंतकैः १३ श्यामता
रक्ततामिश्राकृषिरत्नावकारिणी १४ इतिस्कंधास्थिप्रश्नेत्रयोदशोध्या
यः ११ वक्तदेशेपुत्रपौत्रवंश्यंनाशोच्यतेफलं किंचिच्छुभयुतंश्यामव
र्णंतत्रशुभंमतं १ पुत्रोत्पत्तेस्तथागर्भेपुत्रोत्पत्तेश्चकारणं वधाग
मोनवीनायाःरहेत्वाभवतिध्रुवं २

और जेकरमोंढेसेदक्षिणपृष्ठलालहोवे तांयुद्धवडाहोवे औरलहूवर्णे औ
रकालीरेखांकरकेयुक्तवामभागहोवे तांवडीमृत्युहोतीहै अवदेशवाला
यांकेविना १ औरजददक्षिणपासेकाशिररेखाकरकेयुक्तहोवे औरवामेभा
गदासिरसारालालहोवे तदशत्रुवांकोच्छेदनभेदन औरघेरेमेंप्राप्तहोना
तंगीहोनी एहफलप्राप्तहोताहै और अपणीजयकावीप्रथमविक्रया
हहै ११ वामेपासेदासिरलालहोवे तांशत्रूदीसेनादानाशहोताहै हानिहोती
है धजागिरपडतीहै औरयदछातीदेकिनारेमेंश्याहीहोवे तांसेनाकाउत्थानहो
ताहै औरउसपासेस्वस्थतानेरहती १२ औरजदउसछातीदेमध्यविचदोअंगुलप्र
माणश्याहीहोवे तांनगरऔरसेनाआदिकोंस्वस्थताहोतीहै कोईक्लेशनहींहो
ताहै १३ औरजेकरश्याहीसुरखीदेसाथमिलीदीहोवे तांलहूवर्णदाअनुमा
नहै आगेपरमेश्वरकीरछाहै १४ इतिस्कंधास्थिप्रश्नेत्रयोदशोध्यायः ११ अव
वीदमपुत्रपौत्रऔरवंशयाहै उनांदाफलकहतेहैं इनांदेवास्तेयोस्थाननियत
है यजउसस्थानमेंश्याहीथोडेविचरंगकेनेमिलीदीहोवे तांइनांदेशुभफलदा
अनुमानहै १ औरस्त्रीरमेंपुत्रहोनेदाकारणहै अथवाजेकरगर्भहोवे तांगर्भसे
पुत्रहोवेगा ११

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कंधस्य शिरसः स्याकं त्रिकोणाकृतिर्हिरन्विता दीर्घा स्थूला च भवति तदा
पुत्रप्रदा मता २ यदा विस्तृतभागान्तरे प्रथमे कोष्ठे अंगुलान्तरे अर्धांगुलान्तरे
वापि स्थूलहृद्भागे प्रदृश्यते ४ तदा तस्मिन्गृहे मृत्युरेकस्य मनुजस्य स्मृतः
छिद्रमानेन जानीयान्महान्तं लघुमेव वा ५ अथवा जायते रोगो मृत्यु
तुल्यश्च गृहे गृहे चोरकस्य प्रतिवेशस्य तुःखं मंथो च्छिद्रकैः ६ प्रायो
ऽपि तं यदा तत्र मध्ये श्यामिका युत मत्स्यं मृत्यु प्रदं प्रोक्तं रक्तं वा स्यमृ
ति प्रदं ७ केचित्स्त्रीणां व्यवस्थां तु स्कंधस्य शिरसः जगुः तद्गतां दया
वा प्रोचुः पुंसां तस्यैव सन्मुखे ८ परं तेन न दृश्येषां यवनानां न संमते ९
इति श्रीमहाराजाधिराज रणवीरसिंहाज्ञया विश्वेश्वरविरचिते स्कंधा
स्थिप्रश्ने भाषाटीकायां चतुर्दशोऽध्यायः १४

अथवा घर में नवीन वस्तु आवेगी अर्थात किसी का विवाह होवेगा २ और जब
मुंढे के शिर के साथ त्रिकोणरूप वा लोह चिन्ह होवे वह हिलती वा मोटी
होवे तो जिनो पुरुषों को ऋषि विद्या उपर निश्चय है वह कहते हैं कि [illegible] के घर
में पुत्र होया होवेगा तो शताब्दी पुत्र होवेगा ३ विस्तृत तल में एक अंगुल वा
आधी अंगुल अंतराल में जो बड़ा तल है उसके पार छिद्र होवे या छिद्र जैसा
होवे ४ तब उस घर में एक आदमी मृत्यु को प्राप्त होवेगा जैसा छिद्र होवेगा
तैसा मनुष्य मरेगा अर्थात् छोटा छिद्र होवे तो छोटा मरेगा बड़ा होवे तो
बड़ा मध्यम मृत्यु को प्राप्त होवेगा ५ अथवा उस घर में किसी को मृत्युतु
ल्य कष्ट रोग होवेगा वा पड़ोसी वाला चोड़ मरेगा और जितने छिद्र होवेंगे
उतनी प्रकार के रोग होवेंगे ६ बहुतकार के जानना चाहिये कि उस जगा में
सफेद रंग के मध्य में काला रंग देखने में आवे तो मनुष्य का मृत्यु होगा जो ला
ल होवे तो थोड़े दाम मृत्यु कहना ७ कोई आचार्य स्त्रियों की व्यवस्था कंधे के शिर से
कहते हैं अथवा उसके गर्त में कहते हैं गेर उसी के सामने जो स्थान है उसमें ८
पुरुषों की व्यवस्था करते हैं ८ परंतु यह बात और यवनों को संमत नहीं है
इति श्रीमहाराजाधिराज रणवीरसिंहाज्ञया विश्वेश्वरविरचिते स्कंधास्थिप्रश्ने
भाषाटीकायां चतुर्दशोऽध्यायः १४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्कं॰
टी॰
२३

अथमिश्रकाध्याय विवाहवाग्दानयोर्यस्यानेतत्रवश्यामता त
योः शुभायभवतिसेततोहानिदामता १ प्रवास्यागमएछावेतदा
चिंत्यविचक्षणैः स्कंधायोभागतोद्यतगामीरंध्रंभवेत्तदा २ शीघ्रमा
गच्छतितदाप्रवासीतिविनिश्चयः तत्स्थानाद्दूरगंतस्थेचिराद्दागम
नेतदा ३ अस्मिन्वर्षेमहामारीभयंभवतिवानवा भविष्यतितदास्क
स्य हेकस्यस्रुतिर्भवेत् ४ एवंविचारस्कंधास्थिपृष्ठेरेखात्रयीभवे।
त् रेखाहयस्यसंयोगोस्कंधास्थ्नोतेयदाभवेत् ५ निःसारस्थासमु
खेवस्कंधास्थ्नःपर्वतेभवेत् निःसारस्थःसमीपात्तरेखाचेद्धोचिता
यदा ६ स्कंधस्यार्धतथादीर्घमंतपर्यंतगेयदा वामपार्श्वेरक्तवर्णा
रेखादद्येल्पसंमिता ७

अथमिश्रकाध्यायलिखतेहैं विवाहऊदमाईकेवास्ते योस्थाननियतहै
उसमेंजवस्याहीहोवे तोविवाहऊडमाईदीअवस्थाशुभहोतीहै और
जोउसस्थानमें सपेदीहोवे तोविवाहऊडमाईदीहानिकहनीचाहि
ये १ जदप्रवासीदाआगमनदेखनाहोवे तदपहवात चिंतनकरनी।
चाहिए जेकरछानेदेपहाउदेअंतणों मुढेदेहेठसंयोगकरनेवाले
स्थानमेंछेडहोवे २ तदप्रवासीनिश्चयकरकेसताबीआवेगा जद उ
सस्थानसेवहरंध्र अर्थात् हरहोवे तोप्रवासीचिरकालमेंआवेगा
३ और यदमालूमकरनाहोवे कि इससालमेंमहामारीकाभयहो
वेगा कि नही और यदहोवेगा तोकिसकेघरमें किसकोमृत्युहो
वेगा ४ जद एसाविचारकरनाहोवे तोदेखो छानेदीपीठमेंत्रय।
रेखा और दोरेखाछानेदेअंततकसंयोगकरें ५ औरछानेदा प
हाड सामनेसुरकनीहड्डीदेहोवे औरसुरकनीहड्डीदेसमीपरेखा
लंघगैदीहोवे ६ और यदमोढेदाअर्धअंततकलंबाहोवे औरवा
मेपासेलालरंगदियांरेखांहोन औरदहिणेपासेरेखांथोडियांहोन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एवंविह्नेष्वदृष्टेषुमहामारीभयंनहि श्वेतेवेदिनिवर्तेतभवेत्यायोम
हत्सवै ८ सर्वात्स्वष्टानिवर्तेतभयंतस्येतिनिश्चयः लघुरेखावामभा
गेमध्येतन्मस्तुखेपिच ९ मध्यमानांशुभंतेषांतस्यावापिनिवर्तते निः
सारिस्थिमध्यभागेरक्तवर्णायदृश्यते १० वामांतमपिरक्तंचेत्तदामारी
भयंभवेत् तस्मादेशान्निष्क्रान्तःपुनर्देशांतरंव्रजेत् ॥ व्यापारादिषु
वस्त्वावनामिच्छापदाभवेत् स्कंधस्यदक्षभागतुपर्वेदृष्टासमाहि
तः १२ निःसारास्थिसमीपाश्चरक्तवर्णातुरेखिका स्कंधाद्दिनावसंयु
ताक्रमात्कुतानगापिच १३ वामभागेतथेवान्यारक्तारेखोदितानगा
भागद्वयेपिचयदस्थिसुक्रेषुदृष्टमेवतथा १४

जवऐसेचिह्नदेखनेमेंआवे तोमहामारीकाभयनहीहोता जोहोयावीहोवे
तोहटजाताहै औरऐसेलक्षणोंसेवहुतकरकेवडेआदमियोंकोमहामारी
काभयहोताहै ८ औरकहतेहैं किजवपूर्वोक्तलक्षणहोवे तदसंपूर्ण
लोकोंकोस्पर्शकरके पीछेसेनिश्चयकरकेहटजातीहै परंतुनुकसान
नहीहोता औरजवछोटीयांरेखावामेपासेहोन तथादहिणेपासेवी
उसीकेसन्मुखरेखाहोन ९ तो मध्यमदरजेवालेलोकोंकोशुभहोता
है महामारीवीहटजातीहै औरजवसज्जेपासेदीमुरकनीहडीलाल
रंगदीहोवे १० औरवामेपासेदेमुंढेदाअंतवीलालहोवे तोमहामारी
कावडाभयहोताहै फेरउसदेशथोंहटकरऔरदेशांतरकोंजातीहै ॥
जेकरव्यापारखरीदफरोकतदीव्यवस्थाजाननेदीइच्छाहोवे तोमुंढेके
दहिणेपृष्ठमेंदृष्टिदेनीचाहिये देखनेवालासावधानहोवे १२ यदमुर
कनीहडीकेसमीपसेलालरंगकीरेखाउसपृष्ठमेंहोवें औरमुंढेदेपर्वत
केसंयोगकरके क्रमानतकगेहोवे १३ औरतैसहीवामेभागमेंवी रे
खालालआदयोंअंततकहोवे औरदोनोभागमेंजोवाकीथ्यानहै सो
शुद्धसफेदहोवे १४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

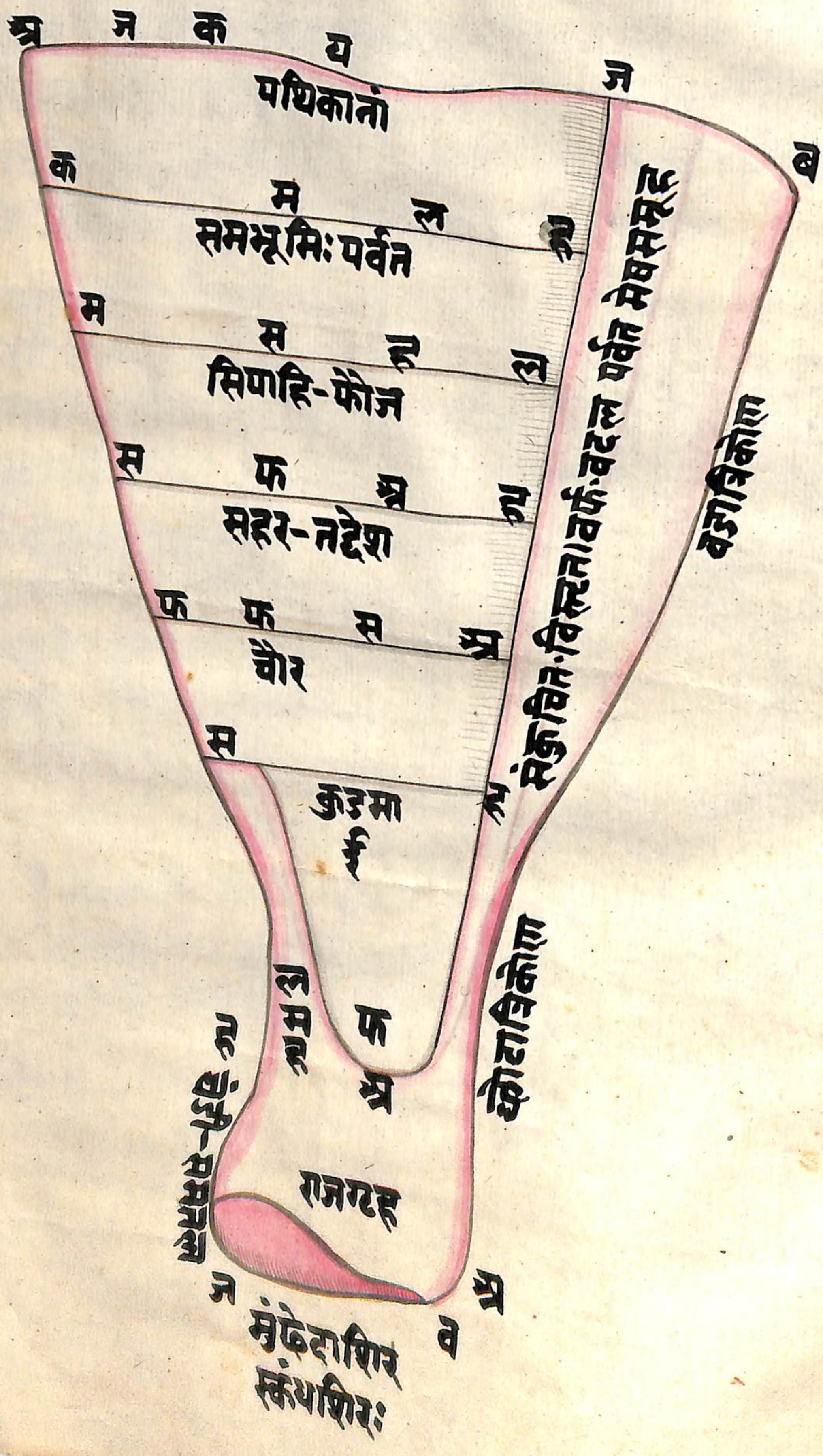
तदा कुशलसर्वैः स्याद्व्यापारो लाभदः स्मृतः शेषं यदा शलिवर्णं लाभो हानिश्चैव तदा १५ स्वामारेखा यदा तस्य दक्षे विंडत्रयं तथा त्रिकोणं च स्वरूपेण स्यात् लाभप्रदं तदा १६ अंगुष्ठस्थाने यदा शुद्धे स्वल्पापि स्यात् मतात् चेत् चिह्नैश्च रहिते दृष्टे तदा व्यापारजं भयं १७ विपत्तिः स्याद्वा स्मोतित स्तोकारचिंतने ईश्वरस्मरणाच्चापि जपदानादितो शुभं १८ वस्तु ग मां के अष्टसंते वर्षमासेन भाषाके विश्वेश्वरेण रचित श्रेसं स्कंधाष्टिमंतके १९ इति श्रीमहाराजरणवीरसिंहात्मजाविश्वेश्वरविरचिते स्कंधाष्टिप्रसे मिश्रकाध्यायः समाप्तो यं ग्रंथः शुभं भूयात् ॥

तदकुशलता सब व्यापार से लाभ देने वाला होता है और जब दोनों का। शेष शलि देवणे वाला होवे तो लाभ वी होता है हानि वी होती है १५ और जब उसके रेखा कालियां होवन् तथा दहिणे पासे त्रय विंदु त्रिकोण स्वरूप वाले होवन तो व्यापार में कोई सा कीवनाया होवे चाहे वहुने उहोवे चाहे हूर होवे लाभ कों देणे वाला होता है १६ और यदस्गुष्ठके का स्थान शुद्ध होवे चिट्ठा होवे स्याम ता थोड़ी वी नै होवे और चिह्न वी कोई नै उस विषे देखने में आवे तो व्यापार करने में वड़ा भय होता है १७ वड़ी विपती उसकों पड़ती है उसके हरकरणे वास्ते कोई उपाय चिंतन करे अथवा ईश्वर का। स्मरण करे जप दान आदि करने से शुभ होता है १८ संवत उन्नीसौ अठतरी के श्रावण महीने में पकुसं स्कंधाष्टि मंतक ग्रंथ मैने वनाया १९ इति श्रीमन्महाराजाधिराज जंबू काश्मीरेति वतादि अनेक देशाधिपति प्रभुवर महाराज श्री १०८ रणवीरसिंहात्मजाज्येति विद्धि विश्वेश्वर विरचित स्कंधाष्टि प्रश्ने भाषाटीकायां मिश्रकाध्यायः समाप्तो यं ग्रंथः शुभं भूयात् ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

25



© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

58

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri